بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

संपादक
शेख मुजाहिदअहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11
अंक -12

Postal Reg. No.GDP -45/2026-2028

29 रमज़ान 1447 हिज्री कमरी, 19-अमान 1405 हिज्री शम्सी, 19 मार्च 2026 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

وَاِذَا سَاَلَکَ عِبَادِیۡ عَنِّیۡ فَاِنِّیۡ قَرِیۡبٌ ؕ اُجِیۡبُ دَعۡوَۃَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلۡیَسۡتَجِیۡبُوۡا لِیۡ وَلۡیُؤۡمِنُوۡا بِیۡ لَعَلَّهُمۡ یَرۡشُدُوۡنَ ○

अनुवाद: और जब मेरे बन्दे तुमसे मेरे बारे में पूछें, तो निस्संदेह मैं निकट हूँ। जब कोई मुझे पुकारता है तो मैं पुकारने वाले की प्रार्थना का उत्तर देता हूँ। इसलिए चाहिए कि वे भी मेरी पुकार को स्वीकार करें और मुझ पर विश्वास रखें, ताकि वे सही मार्ग प्राप्त करें।

(सूरह अल-बक़रह : 187)

रमज़ान दया, क्षमा और जहन्नम से मुक्ति का मार्ग है

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि शाबान के आख़िरी दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें ख़ुतबा देते हुए फ़रमाया:

"लोगो! तुम पर एक महान महीना छा गया है। यह ऐसा बरकत वाला महीना है जिसमें एक रात हज़ार महीनों से बेहतर है। ख़ुदा तआला ने इस महीने के रोज़ों को अनिवार्य किया है और इसकी रातों में इबादत के लिए खड़े होने को नफ़्ल ठहराया है। इसलिए जो कोई इस महीने में नफ़्ल इबादतों के द्वारा ख़ुदा तआला की निकटता चाहता है, तो वह ऐसा है मानो उसने रमज़ान के अलावा किसी और समय में एक फ़र्ज़ अदा किया हो। और जो कोई इस महीने में एक फ़र्ज़ अदा करता है, तो वह ऐसा है जैसे उसने दूसरे दिनों में सत्तर फ़र्ज़ अदा किए हों।

यह धैर्य का महीना है और धैर्य का प्रतिफल जन्नत है। यह सहानुभूति और हमदर्दी का महीना है। यह ऐसा महीना है जिसमें ईमान वाले का रोज़ी-रिज़्क बढ़ा दिया जाता है। और इस महीने में जो किसी रोज़ा रखने वाले को इफ़्तार कराता है, उसके लिए यह उसके गुनाहों की माफी और उसकी गर्दन को जहन्नम से आज़ाद कराने का कारण बनता है। इफ़्तार कराने वाले को रोज़ा रखने वाले के बराबर पुण्य मिलता है और रोज़ा रखने वाले के पुण्य में कोई कमी नहीं की जाती।

सहाबा ने अर्ज़ किया: "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हम में से हर व्यक्ति रोज़ा रखने वाले को इफ़्तार कराने की सामर्थ्य नहीं रखता।"

तो आपने फ़रमाया: "यह पुण्य उस व्यक्ति को भी मिलेगा जो किसी रोज़ा रखने वाले को एक घूंट दूध, या पानी, या एक खजूर से इफ़्तार कराए। और जो किसी रोज़ा रखने वाले को पेट भर कर खाना खिलाएगा, तो ख़ुदा तआला उसे मेरे हौज़ से ऐसा पिलाएगा कि जन्नत में प्रवेश करने तक उसे प्यास नहीं लगेगी।

यह ऐसा महीना है जिसका पहला भाग दया का है, बीच का भाग क्षमा का है और आख़िरी भाग जहन्नम की आग से मुक्ति का है। और जिसने अपने सेवक के काम में इस महीने में कुछ हल्कापन कर दिया, ख़ुदा तआला उसकी माफी फरमाएगा और उसे जहन्नम की आग से मुक्ति प्रदान करेगा।"

मोमिन को चाहिए कि वह अपने अस्तित्व से स्वयं को ख़ुदा तआला की राह में साहसी सिद्ध करे

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

यदि ख़ुदा चाहता तो दूसरी उम्मतों की तरह इस उम्मत में कोई बंधन न रखता, किन्तु उसने ये बंधन भलाई के लिए रखे हैं। मेरे विचार में मूल बात यही है कि जब मनुष्य सच्चाई और पूर्ण निष्ठा के साथ बारी तआला के सामने निवेदन करता है कि इस महीने में मुझे वंचित न रखना, तो ख़ुदा उसे वंचित नहीं रखता। और ऐसी अवस्था में यदि कोई मनुष्य रमज़ान के महीने में बीमार हो जाए, तो यह बीमारी उसके लिए दया बन जाती है, क्योंकि प्रत्येक कर्म का आधार नीयत पर होता है।

मोमिन को चाहिए कि वह अपने अस्तित्व से स्वयं को ख़ुदा तआला की राह में साहसी सिद्ध कर दे। जो व्यक्ति रोज़े से वंचित रह जाता है, परन्तु उसके हृदय में सच्चे मन से यह इच्छा थी कि काश मैं स्वस्थ होता और रोज़ा रखता, और उसका हृदय इस बात पर व्याकुल है, तो फ़रिश्ते उसके लिए रोज़े रखेंगे, बशर्ते कि वह बहाना करने वाला न हो। तब ख़ुदा तआला उसे सवाब से हरगिज़ वंचित नहीं रखेगा।

यह एक बहुत सूक्ष्म बात है कि यदि किसी व्यक्ति पर (अपने मन की आलस्य के कारण) रोज़ा कठिन लगता है और वह अपने विचार में यह समझता है कि मैं बीमार हूँ, और मेरी सेहत ऐसी है कि यदि एक समय भोजन न करूँ तो अमुक-अमुक कष्ट हो जाएंगे और यह होगा और वह होगा, तो ऐसा व्यक्ति जो ख़ुदा की नेमत को स्वयं अपने ऊपर भारी समझता है, वह उस सवाब का अधिकारी कैसे हो सकता है?

हाँ, वह व्यक्ति जिसका हृदय इस बात से प्रसन्न है कि रमज़ान आ गया है और वह इसकी प्रतीक्षा कर रहा था कि यह आए और मैं रोज़ा रखूँ, किन्तु फिर बीमारी के कारण वह रोज़ा नहीं रख सका, तो वह आकाश के लेखे में रोज़े से वंचित नहीं है।

(तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, जिल्द प्रथम, प्रकाशित नज़ारत नशर व इशाअत क़ादियान, द्वितीय संस्करण, सन प्रकाशन 2004, पृष्ठ 262)

तफ़सीर-ए-कबीर से अंश

रमज़ान मुबारक में क़ुरआन मजीद का पूरा दौर (पाठ) करने की श्रेष्ठता

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु شَهۡرُ رَمَضَانَ الَّذِیۡۤ اُنۡزِلَ فِیۡهِ الۡقُرۡاٰنُ की व्याख्या करते हुए फ़रमाते हैं:

इसके तीसरे अर्थ यह हैं कि रमज़ान में पूरा क़ुरआन उतारा गया। जैसे हदीसों में हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से वर्णित है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी अंतिम बीमारी के समय हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया:

"اَنَّ جِبۡرِیۡلَ کَانَ یُعَارِضُنِی الۡقُرۡاٰنَ فِیۡ کُلِّ سَنَۃٍ مَرَّۃً وَاِنَّہٗ عَارَضَنِی الۡعَامَ مَرَّتَیۡنِ"

अर्थात जिब्रील हर वर्ष रमज़ान के महीने में मेरे साथ पूरा क़ुरआन करीम एक बार दोहराया करते थे। लेकिन इस वर्ष उन्होंने दो बार दोहराया है, जिससे मैं समझता हूँ कि अब मेरी मृत्यु का समय निकट है

(शरह अल्लामा ज़रक़ानी अला अल-मवाहिब अद-दुनिया, अध्याय प्रथम: अल्लाह तआला की नेमत के पूर्ण होने के संबंध में)

इसमें कोई संदेह नहीं कि रमज़ान के अतिरिक्त दूसरे महीनों में भी क़ुरआन उतरा है, लेकिन रमज़ान मुबारक की यह विशेषता है कि इसमें जितना क़ुरआन करीम उतर चुका होता था, जिब्रील उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ मिलकर दोहराया करते थे। दूसरे शब्दों में, मानो पूरा क़ुरआन करीम फिर से आप पर उतारा जाता था।

शेष 9 पर

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

भारत के अहमदियों के लिए उर्दू भाषा का महत्व

उर्दू भाषा, जिसकी शुरुआत यद्यपि तेरहवीं शताब्दी ईस्वी में हो चुकी थी और जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक, सभ्यतागत और भाषाई मिलावट से समृद्ध होकर अठारहवीं शताब्दी के अंत तक भाषा के रूप में अपनी विशेषताओं में पूर्णता प्राप्त कर चुकी थी, और इस योग्य हो गई थी कि भारत के अधिकांश क्षेत्रों और विभिन्न धर्मों के लोग इसे समझ सकें तो ख़ुदा तआला ने हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद और महदी माहूद अलैहिस्सलाम को इसी भाषा के माध्यम से इस्लाम के प्रचार और लोगों की नैतिक-आध्यात्मिक शिक्षा के लिए भेजा।

अतः हम देखते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अधिकांश ज्ञानपूर्ण वक्तव्य और लेखन उर्दू में ही है, यद्यपि आपने अरबी और फ़ारसी में भी पुस्तकें लिखी हैं, और आपका प्रभावशाली तथा उच्च कोटि का काव्य भी अरबी और फ़ारसी में उपलब्ध है। इसी प्रकार आप पर जो ईश्वरीय संदेश (इल्हाम) हुए, वे भी उर्दू के अतिरिक्त अधिकतर अरबी में, फिर फ़ारसी में, यहाँ तक कि अंग्रेज़ी और हिंदी भाषा में भी हैं। किन्तु आपका अधिकतर गद्य और पद्य साहित्य उर्दू में ही है।

उर्दू की लिखने की शैली यद्यपि फ़ारसी और अरबी लिपि से मिलती-जुलती है और हिंदी की लिखने की शैली संस्कृत पर आधारित है, लेकिन आज के समय की बोलचाल में हिंदी बोलने वाले लोग भी उर्दू भाषा को अच्छी तरह समझ सकते हैं। अब तो भारत में उर्दू और हिंदी की लिपियाँ भले ही अलग-अलग हों, किन्तु बोलने के दृष्टिकोण से उनमें इतना अधिक साम्य है कि दोनों को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। उर्दू की एक विशेषता यह भी है कि अरबी और फ़ारसी के निकट होने के कारण इसे जानने वाले लोग पुराने अरबी-फ़ारसी साहित्य और ज्ञान को आसानी से ग्रहण कर सकते हैं, बल्कि उसे आगे भी बढ़ा सकते हैं, और वास्तव में ऐसा हुआ भी है। यदि पिछले तीन सौ वर्षों में भारत में प्रकाशित उर्दू पुस्तकों को देखा जाए, तो स्पष्ट होता है कि इन पुस्तकों ने मुसलमानों को इस्लामी मूल स्रोतों के निकट लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस संबंध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक महत्वपूर्ण बात बयान की है। आप फ़रमाते हैं कि चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुदा तआला ने पूरी दुनिया के सुधार के लिए भेजा था, इसलिए सूरह अल-जुमुआ की आयत "वा आख़रीन मिन्हुम लम्मा यल्हक़ू बिहिम" के अनुसार आपकी दो बार भेजे जाने की योजना थी। पहली बार भेजे जाने में मार्गदर्शन की पूर्णता हुई, किन्तु उस समय पूरी दुनिया में इस मार्गदर्शन के प्रसार के साधन उपलब्ध नहीं थे। इसलिए आपका दूसरा आगमन, जो मार्गदर्शन के प्रसार की पूर्णता के लिए था, उन साधनों के उपलब्ध हो जाने के बाद आपके पूर्ण प्रतिनिधि इमाम महदी और मसीह मौऊद के माध्यम से होना निर्धारित था। और इसके लिए ख़ुदा ने जिस भाषा को चुना, वह उर्दू भाषा थी।

भारत की उर्दू भाषा उस समय अन्य भाषाओं की तुलना में इस योग्य हो चुकी थी कि वह उन विषयों का भार उठा सके जिन्हें मसीह मौऊद ने प्रस्तुत करना था, और उन संदेशों को लोगों के दिलों में आकर्षण के साथ स्थापित कर सके जो उन पर अवतरित होने वाले थे। इस संबंध में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"आयत 'वा आख़रीन मिन्हुम लम्मा यल्हक़ू बिहिम' और आयत 'कुल या अय्युहन्नास इन्नी रसूलुल्लाहहि इलैकुम जमीअन्' के अर्थ के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दूसरी बार भेजे जाने की आवश्यकता हुई। तब उन सभी साधनों रेल, तार, भाप के जहाज़, छापाखाने, डाक व्यवस्था की उत्तम व्यवस्था, विभिन्न भाषाओं का ज्ञान, और विशेष रूप से भारत में उर्दू भाषा, जो हिंदुओं और मुसलमानों के बीच एक साझा भाषा बन गई थी ने अपनी स्थिति के माध्यम से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में निवेदन किया कि ऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! हम सब साधन उपस्थित हैं और संदेश के प्रसार का कर्तव्य पूरा करने के लिए पूरे मन और प्राण से तैयार हैं। आप पधारिए और इस कर्तव्य को पूरा कीजिए, क्योंकि आपका दावा है कि मैं समस्त मानवता के लिए आया हूँ। अब वह समय आ गया है कि आप पृथ्वी पर रहने वाली सभी जातियों तक क़ुरआनी संदेश पहुँचा सकते हैं, और संदेश के प्रसार को पूर्णता तक पहुँचा सकते हैं तथा सत्य के प्रमाणों को सब लोगों तक फैला सकते हैं।

तब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आध्यात्मिक शक्ति ने उत्तर दिया कि देखो, मैं प्रतिनिधि रूप में आऊँगा, परन्तु मैं भारत में आऊँगा, क्योंकि सभी धर्मों की सक्रियता, विभिन्न मतों का संगम, सभी धर्मों का आमना-सामना, तथा शांति और स्वतंत्रता यहाँ उपलब्ध है।"

(तोहफ़ा गोलड़विया, पृष्ठ 165-164, प्रकाशित क़ादियान)

अतः इस संदर्भ के प्रकाश में भारत के अहमदियों का, जो उर्दू भाषा जानते हैं, यह कर्तव्य बन जाता है कि वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस पूर्ण प्रतिनिधि के सहायक बनें, जिसका प्रकट होना भारत में हुआ है। उन्हें हर प्रकार से सहायता करनी चाहिए और इस्लाम के प्रचार के आध्यात्मिक प्रयास में लेखन, भाषण और आर्थिक सहयोग हर प्रकार से भाग लेना चाहिए।

क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आध्यात्मिक शक्ति ने इन सभी आधुनिक साधनों को यही उत्तर दिया है कि भारत ही वह स्थान है जहाँ उनके पूर्ण प्रतिनिधि का मिशन सफल हो सकता है। और चूँकि इसके लिए उर्दू भाषा एक केंद्रीय भूमिका निभा रही है क्योंकि बोलचाल के दृष्टिकोण से यह इस समय भारत के लगभग एक दर्जन प्रांतों में समझी और बोली जाती है और हिंदी बोलने वाले लोग भी उर्दू को समझ और बोल सकते हैं।

इसके अतिरिक्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अधिकांश आध्यात्मिक ज्ञान उर्दू भाषा में है, और वर्तमान समय में सभी ख़लीफ़ाओं तथा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ख़ुत्बे, भाषण और मजलिस-ए-इरफ़ान भी उर्दू भाषा में उपलब्ध हैं।

अतः इन आध्यात्मिक ख़ज़ानों को समझने के लिए क्योंकि बोलचाल के स्तर पर हिंदी और उर्दू लगभग समान हैं यह आवश्यक है कि हम उर्दू भाषा सीखें। विशेष रूप से वे मित्र जो हिंदी बोलने वाले प्रांतों में रहते हैं, वे आध्यात्मिक रूप से स्वयं को जीवित रखने और अपनी क़ौम को जीवित करने के लिए तुरंत उर्दू भाषा सीखकर उसका उपयोग कर सकते हैं, और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज्ञान को सीखकर प्रचार का कर्तव्य निभा सकते हैं।

और चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की आध्यात्मिक शक्ति ने यह भी कहा है कि भारत वह स्थान है जहाँ धार्मिक स्वतंत्रता उपलब्ध है और यह वास्तव में सत्य है कि भारत में अन्य देशों की तुलना में धार्मिक स्वतंत्रता और प्रचार का अधिकार अधिक उपलब्ध है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह ने उर्दू भाषा सीखने की ओर ध्यान दिलाते हुए अपने शुक्रवार के ख़ुत्बे (2 जुलाई 1993) में फ़रमाया:

"मेरी दूसरी नसीहत यह है कि आप उर्दू की ओर ध्यान दें। इल्हामों के अलावा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अधिकांश रचनाएँ उर्दू में हैं। जब तक आप उर्दू नहीं सीखेंगे, तब तक आप उनकी ज्ञान से भरी पुस्तकों में वर्णित आध्यात्मिक बातों से सही अर्थ में परिचित नहीं हो सकते, क्योंकि अनुवाद में वह सुंदरता और आनंद कभी प्राप्त नहीं हो सकता जो स्वयं उनकी लिखी हुई रचनाओं को पढ़ने से प्राप्त होता है।"

अतः हर अहमदी का कर्तव्य है कि वह उर्दू सीखकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और ख़लीफ़ाओं के आध्यात्मिक ख़ज़ानों से अपनी प्यास बुझाए और सत्य के प्यासे लोगों को भी इस जीवनदायी जल से तृप्त करे।

वबिल्लाहि तौफ़ीक़

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

''आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हरगिज़ यह इच्छा नहीं थी कि लोग आपको पैग़म्बर कहें और आपकी आज्ञा का पालन करें। इसी कारण आप एक गुफा में, जो कब्र से भी अधिक संकरी थी, जाकर उपासना किया करते थे और आपका बिल्कुल भी इरादा नहीं था कि वहाँ से बाहर आएँ। अंततः खुदा तआला ने अपनी योजना से आपको स्वयं बाहर निकाला और आपके माध्यम से संसार पर अपने प्रकाश को प्रकट किया।'' (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

उपासना खुदा तआला के प्रेम के बिना नहीं होती और खुदा तआला का प्रेम उपासना के बिना नहीं होता। यदि खुदा तआला का प्रेम न हो तो सच्ची उपासना हो ही नहीं सकती।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब हमें आदेश दिए तो उनकी पराकाष्ठा भी अपने आचरण से करके दिखा दी और फिर हमें ध्यान दिलाया कि वास्तविक आज्ञापालन और अनुकरण तभी पूरा होगा जब तुम इस स्तर पर अपने आप को लाने का प्रयास करोगे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वे प्रार्थनाएँ जो आपने अपनी उम्मत के लिए कीं, तब ही हमें अपने प्रभाव में लेंगी और हमारे लिए लाभदायक होंगी, जब हम हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आचरण और आदेशों को सदा सामने रखकर पालन करने का प्रयास करेंगे। केवल दिखावे और कहने से लाभ प्राप्त नहीं हो सकता।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम खुदा तआला की उपासना का कोई अवसर हाथ से जाने नहीं देते थे, बल्कि सोते हुए भी उपासना की अवस्था रहती थी।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने न केवल अपने उच्च स्तर स्थापित किए, बल्कि इन स्तरों को प्राप्त करने की सलाह भी दी है कि यदि तुम लोग भी इस प्रकार करोगे तो खुदा तआला का प्रेम भी प्राप्त करोगे और खुदा तआला की सज़ा से भी बच सकोगे।

सहाबा कराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के जो आदर्श हमारे पास पहुँचे हैं, वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिक्षा और प्रशिक्षण के कारण ही पहुँचे हैं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की ऐसी शिक्षा की कि उनकी उपासनाओं के स्तर निरंतर ऊँचे से ऊँचे होते चले गए और खुदा तआला से प्रेम का स्तर भी निरंतर बढ़ता चला गया। यही वह आदर्श है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्थापित किया, जिसे आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अपनाया और हमारे लिए भी यही आदेश है।

आजकल यदि किसी से नमाज़ों के बारे में पूछा जाए या यह कह दिया जाए कि मस्जिद में नमाज़ें पढ़नी चाहिए कितनी नमाज़ों में तुम मस्जिद में आते हो? तो इस पर लोगों का विरोध शुरू हो जाता है कि यह हमारा व्यक्तिगत मामला है। तुम कौन होते हो हमसे पूछने वाले? जमाअत को यह पूछने की क्या आवश्यकता है? यह हमारा और खुदा तआला का मामला है।

लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो स्वयं तहज्जुद की नमाज़ का भी निरीक्षण किया करते थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अधिक स्वतंत्र और आपसे बढ़कर अधिक स्वाधीन कौन होगा? किंतु आपके संबंध में वर्णन मिलता है कि जब आप प्रार्थना करते थे तो कभी-कभी आपके वक्ष से ऐसी ध्वनि निकलती थी जैसे कोई हांडी उबल रही हो, और आप इतना रोते थे कि आपकी दाढ़ी मुबारक भीग जाती थी।

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जैसे मनुष्य, जो सभी नेक लोगों के सरदार हैं, कर्मों से निरपेक्ष नहीं होते, तो दूसरे लोग किस प्रकार निरपेक्ष हो सकते हैं?

दूसरे लोग किस प्रकार कह सकते हैं कि हम कर्मों से निरपेक्ष हो गए हैं, हमें कर्मों की आवश्यकता नहीं। खुदा तआला क्षमा कर देगा। यह तो अविश्वासियों के कथन हैं, ईमान वालों के कथन नहीं हैं।

क्योंकि यह स्मरण भी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सदा किया करते थे अर्थात रात को आयतुल कुर्सी पढ़ना और तीनों "कुल" पढ़ना इसलिए इस सुन्नत का पालन भी प्रत्येक मुसलमान को करना चाहिए, बल्कि इसे अपने जीवन का आवश्यक भाग बना लेना चाहिए।

नमाज़ों में खुदा तआला के समक्ष उपस्थित होने के जो स्तर हैं, पहले उन्हें प्राप्त करने की आवश्यकता है। उसके बाद नफ़्ल उपासनाएँ हैं। फिर खुदा तआला का स्मरण है। स्मरण मनुष्य को और अधिक नेकियों की ओर ध्यान दिलाता है। किंतु इसके साथ अन्य सदाचार और कर्मों का पालन करना भी आवश्यक है। मनुष्य को उच्च आचरण का भी धारक होना चाहिए। खुदा तआला का निकटत्व प्राप्त करने, अपने समस्याओं के समाधान और अपनी प्रार्थनाओं की स्वीकृति के लिए आवश्यक है कि खुदा तआला के प्रत्येक आदेश का पालन किया जाए, और इस प्रकार किया जाए जिस प्रकार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें करके दिखाया।

इसके लिए प्रयास किया जाए और इस पूर्ण सुन्नत पर अमल किया जाए।

हमने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के श्रेष्ठ आचरण का अनुसरण करते हुए जब आपको स्वीकार किया है, तो आपको शुभ समाचार देने वाला माना है। और उन शुभ समाचारों को हम तभी प्राप्त कर सकते हैं जब हम अपनी उपासना के भी अधिकार पूरा करने वाले होंगे और आपके आदर्श पर चलने के लिए उस स्तर को प्राप्त करने का प्रयास करने वाले होंगे।

याद रहे कि प्रयास के लिए बलिदान करना पड़ता है, संघर्ष करना पड़ता है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उपासना का आकर्षक और हृदयस्पर्शी शैली में वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 06 फ़रवरी 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

जैसा कि खुदा तआला ने हमें बताया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारे लिए उसवा-ए-हसना (श्रेष्ठ आदर्श) हैं और हर मामले में आदर्श हैं। पिछले ख़ुत्बों में इसी संदर्भ में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के खुदा तआला से प्रेम का उल्लेख हो रहा था। खुदा तआला के प्रेम के वर्णन में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उपासना के स्तर का भी उल्लेख हुआ। मेरा विचार था कि खुदा तआला के प्रेम के बाद अगला विषय हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उपासना का

लूँगा, लेकिन जब ख़ुदा तआला के प्रेम का वर्णन आरम्भ हुआ तो उसमें उपासना के भी बहुत से प्रसंग आ गए। चाहने के बावजूद मैं इन दोनों विषयों को अलग नहीं कर सका, क्योंकि दोनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। उपासना ख़ुदा तआला के प्रेम के बिना नहीं है और ख़ुदा तआला का प्रेम उपासना के बिना नहीं है। यदि ख़ुदा तआला का प्रेम न हो तो सच्ची उपासना हो ही नहीं सकती।

फिर भी इस संदर्भ में आज जो और बातें प्रस्तुत करूँगा, उन्हें मैंने उपासना के दृष्टिकोण से लिया है, लेकिन उनका अंतिम परिणाम, जैसा कि मैंने पिछले ख़ुत्बे में भी बताया था, अंततः ख़ुदा तआला के प्रेम तक ही पहुँचता है।

ख़ुदा तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इस प्रेम के स्तर को क़ुरआन-ए-करीम में जिस प्रकार बयान किया है, उसकी व्याख्या मैं पिछले ख़ुत्बों में एक आयत के संदर्भ में कर चुका हूँ। ख़ुदा तआला फरमाता है:

قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ (الانعام:163)

अर्थात तुम कह दो कि मेरी उपासना, मेरी कुर्बानियाँ, मेरा जीना और मेरा मरना सब कुछ ख़ुदा तआला के लिए है जो सारे संसारों का पालनहार है। जैसा कि मैंने कहा, इस आयत की व्याख्या पिछले ख़ुत्बों में हो चुकी है, इसलिए इसे फिर से बताने की आवश्यकता नहीं।

ख़ुदा तआला ने फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से यह घोषणा करवाकर हमें भी इन स्तरों को प्राप्त करने की शिक्षा दी है:

فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ (آل عمران:32)

अर्थात यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे तो ख़ुदा तआला तुमसे प्रेम करेगा और तुम ख़ुदा तआला का प्रेम प्राप्त कर सकोगे। अतः हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह घोषणा करने के लिए कहकर ख़ुदा तआला ने हमें भी इन स्तरों को प्राप्त करने का निर्देश दिया है कि इसे पाने का सच्चा प्रयास करो।

उपासना के बारे में क़ुरआन-ए-करीम में ख़ुदा तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के माध्यम से हमें असंख्य आदेश दिए हैं।

एक स्थान पर फ़रमाया:

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (الذاریات:57)

और मैंने जिन्न और मनुष्यों को केवल इस उद्देश्य से पैदा किया है कि वे मेरी उपासना करें।

अतः स्पष्ट कर दिया कि यदि तुम मेरा अनुसरण करना चाहते हो तो सुनो जिस प्रकार मैंने मनुष्य की सृष्टि के उद्देश्य को समझा है, उसी प्रकार तुम भी इसे समझो और उसके अधिकार को पूरा करने का प्रयास करो। तभी तुम अपने जन्म के उद्देश्य को पा सकोगे और तभी ख़ुदा तआला का प्रेम प्राप्त कर सकोगे।

फिर ख़ुदा तआला उपासना की ओर ध्यान दिलाते हुए एक स्थान पर फरमाता है:

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ۔ (البقرۃ:22)

हे लोगो! अपने उस पालनहार की उपासना करो जिसने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को भी जो तुमसे पहले थे, ताकि तुम धर्मपरायण बन सको।

अतः ख़ुदा तआला का निकटत्व प्राप्त करने और धर्मपरायणता अपनाने के लिए आवश्यक है कि ख़ुदा तआला की उपासना की जाए और उसकी उपासना के स्तर को ऊँचा किया जाए।

फिर ख़ुदा तआला फरमाता है:

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (الحج:78)

हे ईमान लाने वालो! रुकू करो, सज्दा करो, अपने पालनहार की उपासना करो और भले काम करो ताकि तुम सफल हो जाओ।

अतः जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें ये आदेश दिए तो उनकी पराकाष्ठा भी अपने आचरण से करके दिखा दी। फिर हमें ध्यान दिलाया कि सच्ची आज्ञाकारिता और अनुकरण तभी पूर्ण होगा जब तुम अपने आप को इस स्तर तक लाने का प्रयास करोगे। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वे प्रार्थनाएँ जो आपने अपनी उम्मत के लिए कीं, तभी हमें अपने घेरे में लेंगी और हमारे लिए लाभदायक होंगी जब हम आपके आदर्श और आदेशों को सदा सामने रखकर उन पर अमल करने का प्रयास करेंगे। केवल दिखावे और कहने से लाभ प्राप्त नहीं हो सकता।

जो आदर्श हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्थापित किए हैं, उनमें से बहुत से उदाहरण मैं पहले प्रस्तुत कर चुका हूँ। कुछ और उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुदा तआला की उपासना का कोई अवसर हाथ से जाने नहीं देते थे, बल्कि सोते समय भी उपासना की अवस्था रहती थी। जैसा कि आपने स्वयं फ़रमाया:

"मेरी आँख तो सोती है, लेकिन मेरा दिल ख़ुदा तआला की याद और उपासना से ग़ाफ़िल नहीं होता।"

(صحیح البخاری کِتَابُ الْمَنَاقِبِ بَابُ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَنَامُ عَيْنُهُ وَلَا يَنَامُ قَلْبُهُ۔حدیث:3569)

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने अनुयायियों को भी इसकी शिक्षा दी कि तुम्हारा स्तर ऐसा होना चाहिए कि ख़ुदा तआला तुम्हें हर समय याद रहे।

उपासना के मामले में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कितनी बारीकी से अपना आत्म-परीक्षण किया करते थे, इसका एक वर्णन मिलता है। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक ऐसी चादर में नमाज़ पढ़ी जिसमें डिज़ाइन बने हुए थे। आपने एक नज़र उन डिज़ाइनों की ओर देख लिया। जब नमाज़ से फ़ारिग हुए तो फ़रमाया:

"मेरी इस चादर को अबू जह्म के पास ले जाओ और अबू जह्म की सादी चादर ले आओ, क्योंकि इसने अभी मुझे मेरी नमाज़ से थोड़ा विचलित कर दिया है।"

अर्थात हल्की-सी नज़र भी उस पर पड़ी तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह गवारा न हुआ कि मैं उस चादर की ओर देखूँ और मेरी दृष्टि ख़ुदा तआला से हट जाए। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बताया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"मैं उसके डिज़ाइन देख रहा था और नमाज़ में था, इसलिए मुझे डर हुआ कि कहीं वह मुझे परीक्षा में न डाल दे।"

(صحیح البخاری کتاب الصلاۃ باب إذا صلى في ثوب له أعلام ونظر إلى علمها روایت 373)

इसकी व्याख्या में सैयद ज़ैनुल आबिदीन वलीउल्लाह शाह साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा है कि इस अध्याय का विषय यह है कि कपड़े सादे होने चाहिए। उनमें ऐसी चमक-दमक न हो जो ध्यान हटाए। मानसिक उन्नति के साथ मनुष्य स्वभावतः सादगी की ओर झुकता है। वे लिखते हैं कि आज भी हम देखते हैं कि अच्छे रुचि वाले लोग कपड़े चुनते समय सादे रंगों को पसंद करते हैं। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो बार-बार अपने कपड़ों की ओर देखते रहते हैं और उन्हें ठीक करने में लगे रहते हैं। नमाज़ में तो पूरी एकाग्रता ख़ुदा तआला की ओर होनी चाहिए, न कि कपड़ों की ओर।

फिर वे लिखते हैं कि नमाज़ में पूर्ण एकाग्रता आवश्यक है। अर्थात नमाज़ तभी सच्ची नमाज़ हो सकती है जब मनुष्य उसमें पूरी तरह डूब जाए। इसलिए इस्लाम की शिक्षाओं ने नमाज़ पढ़ने वाले के वातावरण में हर उस चीज़ को पसंद नहीं किया जो उसका ध्यान अपनी ओर खींचे।

इससे पता चलता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम किस स्तर की एकाग्रता से ख़ुदा तआला की उपासना करना चाहते थे कि हल्की-सी नज़र भी ऐसी चीज़ पर न पड़े जो ख़ुदा तआला की ओर से ध्यान हटा दे। इसी कारण विभिन्न हदीसों में यह भी कहा गया है कि चित्र नहीं होने चाहिए, सामने चित्रों वाला कपड़ा नहीं होना चाहिए और सामने ऐसा पर्दा नहीं होना चाहिए जिस पर चित्र बने हों, क्योंकि ये सब चीज़ें नमाज़ से ध्यान हटाने का कारण बन सकती हैं। इसलिए इनसे रोका गया है।

(सहीह बुख़ारी ट्रांसलेटर (उर्दू) वॉल्यूम 1 पेज 479 से लिया गया। पब्लिकेशन सुपरविज़न)

इसी प्रकार हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अत्यंत उच्च स्तर का एक और उल्लेख मिलता है।

हज़रत जाफ़र बिन मुहम्मद रज़ियल्लाहु अन्हु अपने पिता से वर्णन करते हैं कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा गया कि आपके घर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का बिस्तर कैसा था? उन्होंने बताया:

"चमड़े का था और उसमें खजूर के रेशे भरे होते थे।"

हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा गया कि आपके घर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का बिस्तर कैसा था? उन्होंने बताया:

"वह ऊन का बना हुआ था। मैं उसकी दो तहें लगा देती थी जिससे वह थोड़ा नरम हो जाता था और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस पर सोते थे।"

एक रात मैंने सोचा कि क्यों न इसकी चार तहें लगा दूँ ताकि यह और अधिक नरम और आरामदायक हो जाए और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए अधिक आराम का कारण बने। इसलिए हमने उसकी चार तहें लगा दीं।

जब सुबह हुई तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पूछा:

"तुमने रात मेरे लिए क्या बिछाया था?"

हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि मैंने निवेदन किया कि वही आपका बिस्तर था, केवल हमने उसकी चार तहें लगा दी थीं ताकि वह आपके लिए

अधिक आरामदायक हो जाए।

इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“इसे पहले जैसा ही रहने दो, क्योंकि इसकी अधिक नरमी मेरे लिए रात की नमाज़ में रुकावट बन रही थी।”

(शमैल अल-नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम), पेज 134, चैप्टर अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के बिस्तर पर क्या आया, रिवायत 314, नूर फाउंडेशन)

यद्यपि बिस्तर की नरमी हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उपासना में बाधा नहीं बन सकती थी, फिर भी आपको यह भावना भी स्वीकार न थी कि बिस्तर नरम है तो थोड़ा और लेट जाऊँ और खुदा तआला की उपासना के लिए न उठूँ तथा इसमें मुझे आराम दिखाई दे। यही था आपका अत्यंत उच्च स्तर।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उपासना की स्थिति का चित्र उम्मुल मोमिनीन हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा ने इस प्रकार वर्णित किया है। वे कहती हैं कि एक बार मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ी और आपने रुकू किया, यहाँ तक कि मुझे अपनी नाक पकड़नी पड़ी। अर्थात रुकू इतना लंबा था कि मुझे भय हुआ कि कहीं मेरी नाक से रक्त न बहने लगे।

(الاصابة فی تمییز الصحابة۔ کتاب النساء، حرف السین-سودہؓ بنت زمعة جلد8 صفحہ 196-197 دار الکتب العلمیة 1995ء)

यह स्थिति उसी समय संभव होती है जब ऐसा प्रेम हो कि मनुष्य का मन अपने प्रिय के द्वार को छोड़ने को न चाहे। जिस भी अवस्था में जाए, जिस भी स्थिति में जाए, उसी में डूब जाए।

इसी प्रकार उपासना के स्तर के बारे में एक और वर्णन मिलता है। मुतर्रिफ़ अपने पिता से वर्णन करते हैं। उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस अवस्था में नमाज़ पढ़ते हुए देखा कि रोने के कारण आपके वक्ष से चक्की चलने जैसी आवाज़ आ रही थी।

(سنن ابی داؤد کتاب الصلوٰۃ باب البکاء فی الصلوٰۃ حدیث 904)

अर्थात जिस प्रकार चक्की चलती है या ग्राइंडर चलता है, वैसी ही ध्वनि सुनाई दे रही थी। एक अन्य स्थान पर उबलती हुई हांडी की उपमा भी दी गई है।

(سنن النسائی کتاب السہو باب البکاء فی الصلوٰۃ حدیث 1214)

फिर एक वर्णन में आता है। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैं सवारी पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे बैठा हुआ था। मेरे और आपके बीच काठी का पिछला भाग था। आपने कहा: “ऐ मुआज़ बिन जबल!” मैंने कहा: “मैं उपस्थित हूँ, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! और यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है।” फिर आप कुछ देर चले और फिर कहा: “ऐ मुआज़ बिन जबल!” मैंने फिर कहा: “लब्बैक या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है।” फिर आप कुछ देर चले और फिर कहा: “ऐ मुआज़ बिन जबल!” मैंने कहा: “लब्बैक या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है।”

तब आपने कहा: “क्या तुम जानते हो कि खुदा तआला का अपने बंदों पर क्या अधिकार है?”

मैंने कहा: “खुदा तआला और उसका रसूल बेहतर जानते हैं।”

तब आपने कहा: “खुदा तआला का अपने बंदों पर यह अधिकार है कि वे उसकी उपासना करें और किसी को उसका साझी न ठहराएँ।”

फिर आप कुछ देर चले और कहा: “ऐ मुआज़ बिन जबल!” मैंने कहा: “लब्बैक या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है।”

आपने कहा: “क्या तुम जानते हो कि जब बंदे ऐसा करें तो उनका खुदा तआला पर क्या अधिकार होता है?”

मैंने कहा: “खुदा तआला और उसका रसूल बेहतर जानते हैं।”

तब आपने कहा: “यह कि खुदा तआला उन्हें दंड न दे।”

(صحیح مسلم کتاب الایمان باب الدلیل علی ان من مات علی التوحید دخل الجنة قطعًا، حدیث:35)

अतः हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने न केवल अपने उच्च स्तर स्थापित किए, बल्कि इन स्तरों को प्राप्त करने की सलाह भी दी कि यदि तुम लोग भी ऐसा करोगे तो खुदा तआला का प्रेम भी प्राप्त करोगे और उसकी सज़ा से भी बच सकोगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रशंसा में एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम क़ुरआन-ए-करीम के प्रचार के लिए नियुक्त थे और उसी प्रकार सुन्नत को स्थापित करने के लिए भी नियुक्त थे। अतः जैसे क़ुरआन-ए-करीम निश्चित और प्रमाणित है, उसी प्रकार निरंतर चलने वाली सुन्नत भी निश्चित है। अर्थात वह सुन्नत जिसका संबंध सीधे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तक पहुँचता हो, जो आपके कर्म से सिद्ध होती हो और जिसे लगातार वर्णन करने वाले लोग क्रम से बताते चले आए हों   अर्थात एक निरंतर श्रृंखला हो।

इन दोनों सेवाओं को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्वयं अपने हाथ से पूरा किया और दोनों को अपना कर्तव्य समझा। जब नमाज़ का आदेश हुआ तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने खुदा तआला के इस आदेश को अपने आचरण से स्पष्ट करके दिखा दिया और व्यावहारिक रूप में बता दिया कि फज्र की नमाज़ की इतनी रकअतें हैं, मग़रिब की इतनी हैं और अन्य नमाज़ों की इतनी-इतनी रकअतें हैं। इसी प्रकार हज भी करके दिखाया और फिर अपने हाथ से हज़ारों सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को इस कर्म का पालन करवाकर व्यवहार की एक सशक्त परंपरा स्थापित कर दी। स्वयं करके दिखाया और फिर उन्हें भी इस पर स्थिर कर दिया।

अतः जो व्यावहारिक आदर्श आज तक उम्मत में निरंतर परंपरा के रूप में दिखाई देता है, उसी का नाम सुन्नत है।

आप अलैहिस्सलाम लिखते हैं कि हदीस को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने नहीं लिखा गया और उसे संकलित करने का प्रारंभ में कोई विशेष प्रबंध नहीं किया गया था।

इस प्रकार आप अलैहिस्सलाम सुन्नत और हदीस की तुलना करते हुए बताते हैं कि दोनों में क्या अंतर है। आपने कहा कि सुन्नत पहले है और हदीस का स्थान उसके बाद आता है, और जो हदीस क़ुरआन-ए-करीम और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत के विरुद्ध नहीं होती, वही सही हदीस है।

(ماخوذ از ریویو بر مباحثہ بٹالوی وچکڑالوی، روحانی خزائن جلد 19 صفحہ 210-212)

अतः जहाँ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रशंसा में यह बताते हैं कि आपकी उपासना के स्तर क्या थे, वहीं यह भी स्पष्ट कर दिया कि आपने यह सब करके दिखाया, अपने अनुयायियों को इन पर अमल करने की शिक्षा दी और उनसे अमल भी करवाया। यही वह सुन्नत है जो आज तक हम तक पहुँच रही है।

सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के जो आदर्श हमारे पास पहुँचे हैं, वे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शिक्षा और प्रशिक्षण के कारण ही पहुँचे हैं। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की ऐसी शिक्षा की कि उनकी उपासनाओं के स्तर निरंतर ऊँचे से ऊँचे होते गए और खुदा तआला से प्रेम का स्तर भी बढ़ता गया। यही वह आदर्श है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्थापित किया, जिसे आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अपनाया और हमारे लिए भी यही आदेश है।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तहज्जुद के बारे में बहुत शिक्षा दी है कि तहज्जुद की नमाज़ पढ़नी चाहिए।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसकी व्याख्या में एक स्थान पर लिखा है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इन नफ़्ल नमाज़ों का इतना ध्यान था कि नफ़्ल होने के बावजूद आप रात को घूम-फिरकर देखते थे कि सहाबा में से कौन इन्हें पढ़ता है। अर्थात जब आप नगर की गलियों और रास्तों से गुजरते थे तो आपको पता चल जाता था कि कहाँ नमाज़ की आवाज़ आ रही है, कौन लोग तहज्जुद के समय उठे हुए हैं और कौन नहीं। अर्थात आप यह भी ध्यान रखते थे कि कौन तहज्जुद पढ़ रहा है और कौन नहीं।

आजकल यदि किसी से नमाज़ों के बारे में पूछा जाए या यह कहा जाए कि मस्जिद में नमाज़ें पढ़नी चाहिए   कितनी नमाज़ों में तुम मस्जिद में आते हो?   तो लोग तुरंत आपत्ति करने लगते हैं कि यह हमारा व्यक्तिगत मामला है। तुम कौन होते हो हमसे पूछने वाले? जमाअत को इसे पूछने की क्या आवश्यकता है? यह हमारा और खुदा तआला का मामला है।

लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तो स्वयं तहज्जुद की नमाज़ का भी निरीक्षण किया करते थे।

एक बार आपकी सभा में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का उल्लेख हुआ कि वे बहुत अच्छे व्यक्ति हैं और उनमें अनेक गुण हैं। तब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा:

“हाँ, वह व्यक्ति तो बहुत अच्छा है, बशर्ते कि वह तहज्जुद पढ़े।”

क्योंकि वे युवा थे और तहज्जुद में कुछ ढिलाई करते थे, इसलिए आपने इस

प्रकार उनका ध्यान दिलाया।

फिर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा कि ख़ुदा तआला उस पति और पत्नी पर दया करे कि यदि रात को पति की आँख खुले तो उठकर तहज्जुद पढ़े और पत्नी को भी जगाए कि तुम भी उठकर तहज्जुद पढ़ो। यदि वह न जागे तो उसके चेहरे पर पानी के छींटे मारकर जगा दे। इसी प्रकार यदि पत्नी की आँख खुले तो वह स्वयं तहज्जुद पढ़े और पति को भी जगाए, और यदि वह न जागे तो उसके चेहरे पर पानी के छींटे मारकर जगा दे।

देखो! एक ओर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पत्नी के लिए पति का सम्मान करना बहुत आवश्यक बताया है और दूसरी ओर तहज्जुद के लिए जगाने के लिए यदि पानी के छींटे भी मारने पड़ें तो उसे भी उचित बताया है। इससे स्पष्ट है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम तहज्जुद को कितना आवश्यक समझते थे।

फिर क़ुरआन-ए-करीम कहता है कि रात में उठना मन को सीधा और शुद्ध कर देता है। यही कारण है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से कहते थे कि चाहे तहज्जुद की केवल दो रकअत ही पढ़ो, लेकिन अवश्य पढ़ो।

फिर हदीसों से यह भी सिद्ध है कि रात के अंतिम भाग में ख़ुदा तआला विशेष रूप से निकट होता है और बहुत-सी प्रार्थनाएँ स्वीकार करता है। इसलिए तहज्जुद पढ़ना अत्यंत आवश्यक और अत्यंत लाभकारी है।

(मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की सीरत-उल-नबी स. से लिया गया, खंड 1, पृष्ठ 416-417)

इसमें कोई संदेह नहीं कि ख़ुदा तआला का फ़ज़्ल ही होता है जिससे मुक्ति मिलती है, और कोई व्यक्ति अपने कर्मों के आधार पर यह दावा नहीं कर सकता कि वह अवश्य मुक्ति पा जाएगा। क्योंकि सबसे बड़े कर्म करने वाले और ख़ुदा के सबसे बड़े आज्ञाकारी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी अपने कर्मों पर भरोसा नहीं करते थे, जैसा कि हदीस में आता है, और इसे मैं पिछले ख़ुत्बे में भी बयान कर चुका हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने श्रीमती आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को और अन्य साथियों को भी यही फ़रमाया, जब उन्होंने पूछा कि आप तो अपने कर्मों के कारण स्वर्ग में जाएंगे। आपने फ़रमाया: "नहीं आयशा! मैं भी ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से ही जाऊँगा।"

इसलिए जब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जैसे महान व्यक्ति, जिनकी हर सांस, जिनका चलना-फिरना उपासना में सम्मिलित था, जिनका सोना और जागना भी उपासना माना जाता था, जिनकी हर गति और शांति उपासना थी, यहाँ तक कि जिनका आवश्यक शारीरिक कार्य के लिए जाना और अपनी पत्नियों के पास जाना भी उपासना माना जाता था इतने बड़े उपासक जब यह कहते हैं कि मैं अपने कर्मों से स्वर्ग में नहीं जाऊँगा बल्कि ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से जाऊँगा, तो फिर और कौन है जो यह कह सके कि मैं अपने कर्मों के कारण स्वर्ग में प्रवेश कर जाऊँगा।

यह मत समझो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हर कार्य कैसे उपासना में सम्मिलित हो गया। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके बारे में ख़ुदा तआला ने स्पष्ट कर दिया है कि आपकी हर अवस्था उपासना थी। अनजान व्यक्ति कह सकता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हर क्रिया कैसे उपासना बन गई? लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि यह बिल्कुल सत्य बात है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का प्रत्येक कार्य उपासना था। हाँ, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति का हर कार्य उपासना नहीं हो सकता।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसवा-ए-हसना हैं, इसलिए आपका प्रत्येक कार्य ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के लिए था, और जो कार्य ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के लिए किया जाए वह उपासना बन जाता है। किसी अन्य व्यक्ति का हर कार्य उपासना नहीं बन जाता।

ख़ुदा तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बारे में फ़रमाया:

"لَكُمْ فِي رَسُولِ اللهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ"

अर्थात् तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रत्येक कार्य में एक उत्तम आदर्श है।

क्या इसका अर्थ यह नहीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने आचरण से बताएं कि कौन सा कार्य उचित है और कौन सा अनुचित है, कौन सा प्रशंसनीय है और कौन सा नापसंद किया गया है, और कौन सा वैध है और कौन सा अवैध। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हर कार्य एक स्पष्टीकरण और विवरण है।

उदाहरण के लिए, आपका नमाज़ पढ़ना केवल ख़ुदा तआला के एक आदेश का पालन ही नहीं था, बल्कि यह घोषणा भी थी कि ये फ़र्ज़ हैं, ये सुन्नत हैं और ये नफ़्ल हैं जो फ़र्ज़ के अतिरिक्त हैं और जिनका पढ़ना ख़ुदा तआला की निकटता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

आपका भोजन करना भी यह घोषणा था कि जो कुछ आप खाते हैं वह वैध है, और जिन चीज़ों को आप नहीं खाते वे खाने योग्य नहीं। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का प्रत्येक कार्य लोगों के लिए एक आदर्श बनाया गया था। जिन चीज़ों को आप वैध बताते थे और स्वयं प्रयोग करते थे वह भी उपासना थी, और जिनसे आप मना करते थे तथा स्वयं प्रयोग नहीं करते थे, वह भी उपासना का ही भाग था।

संक्षेप में, आपका प्रत्येक कार्य उपासना था क्योंकि वह ख़ुदा तआला के आदेश के अधीन था।

इसकी एक मिसाल यह है कि एक व्यक्ति ने अस्र की नमाज़ का समय पूछा। सामान्यतः नमाज़ को प्रारंभिक समय में पढ़ना अच्छा माना जाता है, लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इतना विलंब किया कि समय बहुत कम रह गया। आपका यह विलंब करना भी उपासना था। क्यों? इसलिए कि आप यह शिक्षा दे रहे थे कि यदि किसी कारण से कोई व्यक्ति प्रारंभिक समय में नमाज़ न पढ़ सके, तो यदि वह अंतिम समय तक पढ़ ले तो उसकी नमाज़ हो जाएगी।

इस प्रकार फ़र्ज़ों में भी घोषणा थी, अनिवार्य कर्मों में भी घोषणा थी, और नफ़्ल व सुन्नतों में भी यह घोषणा थी कि यह सब ख़ुदा तआला की उपासना है।

फिर भी इस स्थिति में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि मैं ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से स्वर्ग में जाऊँगा। अर्थात् ख़ुदा तआला ने आपको बता दिया था कि आपका हर कार्य उपासना है, लेकिन फिर भी आपने यही फ़रमाया कि मैं तो ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से ही स्वर्ग में जाऊँगा।

तो फिर हम लोग, जिनके कर्म बहुत थोड़े हैं, कैसे कह सकते हैं कि हम अपने कर्मों से स्वर्ग में चले जाएंगे? इससे स्पष्ट हो जाता है कि ख़ुदा तआला का फ़ज़्ल कितना आवश्यक है।

ख़ुदा तआला का फ़ज़्ल अत्यंत आवश्यक है, लेकिन वह केवल दावे से प्राप्त नहीं हो सकता। उसे प्राप्त करने के लिए भी कुछ आवश्यक है। केवल विश्वास का दावा करने से कुछ नहीं बनता। और वह क्या है? वह है कर्म।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत के अनुसार कर्म करना, और उस पर चलने का प्रयास करना। अपनी उपासना के स्तर को बढ़ाने का प्रयास करना। ख़ुदा तआला की प्रेम प्राप्त करने का प्रयास करना।

तभी, जैसा कि मैंने आरंभ में भी कहा था, उपासना ख़ुदा तआला के प्रेम के बिना नहीं होती, और ख़ुदा तआला का प्रेम उपासना के बिना नहीं होता।

(उद्धारित ख़ुत्बात-ए-महमूद, जिल्द 7, पृष्ठ 111-112)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ की अवस्था कैसी होती थी।

इस विषय में भी मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक स्थान पर अपनी तफ़्सीर में लिखा है। कुछ स्थानों पर मैं अपने शब्द भी कह दूँगा, लेकिन मूल बात वहीं से ली गई है कि बहुत से लोग दुआ करते हैं, मगर उनकी आँखें, उनका हृदय, उनका मस्तिष्क और उनका सीना दुआ का समर्थन नहीं करते।

वे दुआ तो कर रहे होते हैं, लेकिन उनकी आँखें कहीं और होती हैं, हृदय कहीं और लगा होता है, मस्तिष्क कहीं और भटक रहा होता है, और उनके सीने में वह प्रेम नहीं होता जो होना चाहिए ख़ुदा तआला के लिए सच्चा प्रेम।

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (ख़ून, मल, बलगम इत्यादि) कंप्यूटराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
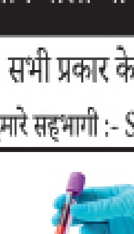
चौधरी ख़िज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

फिर इसका परिणाम क्या निकलता है? परिणाम यही निकलता है कि क्योंकि ये बातें दुआ के साथ नहीं चल रहीं और उसका समर्थन नहीं कर रहीं, इसलिए वह दुआ केवल बाहरी दुआ रह जाती है। उनकी आँखें नम नहीं होतीं, उनका हृदय पिघलता नहीं।

दुआ करते समय आँखों का नम होना चाहिए, हृदय का पिघलना चाहिए, और मस्तिष्क को पूरी तरह एकाग्र होकर ख़ुदा तआला की ओर ध्यान देना चाहिए। जब उनका सीना जोश से भरा हुआ नहीं होता, तो परिणाम यह होता है कि उनकी दुआ उसी प्रकार हवा में उड़ जाती है जैसे धूल उड़ जाती है।

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अधिक स्वतंत्र और आपसे अधिक महान कौन हो सकता है? लेकिन आपके बारे में वर्णन मिलता है कि जब आप दुआ करते थे तो कभी-कभी आपके सीने से ऐसी आवाज़ निकलती थी जैसे हांडी उबल रही हो, और आप इतने रोते थे कि आपकी दाढ़ी भीग जाती थी।

लेकिन बहुत से लोग ऐसे हैं जो अपनी आदतों के अनुसार ख़ुदा तआला के सामने भी घमंड करते हैं और दुआ में रोना उन्हें पसंद नहीं होता।

(उद्धारित सीरत-उन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, लेखक मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु, जिल्द 2, पृष्ठ 149)

नमाज़ों में कोमलता और भावुकता का उत्पन्न होना भी अत्यंत आवश्यक है। इसके लिए मनुष्य को प्रयास करना चाहिए। इसी उद्देश्य के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक उपाय यह भी बताया है कि यदि मनुष्य अपना चेहरा रोने जैसा बना ले, तो उस बाहरी अवस्था का भी हृदय पर प्रभाव पड़ता है और फिर मनुष्य के आँसू भी निकल आते हैं।

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 79, संस्करण 2022)

इस प्रकार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जहाँ हमें यह बताया कि मेरी उपासनाओं का यह स्तर है और मैं आभारी हूँ। ख़ुदा तआला का फ़ज़्ल मुझे बचाएगा, और उस फ़ज़्ल को प्राप्त करने के लिए मैं उपासना भी करता हूँ और ख़ुदा तआला की नेमतों पर उसका आभार भी व्यक्त करता हूँ। क्योंकि ख़ुदा तआला तो सर्वसम्पन्न है। यदि मैं कृतज्ञता व्यक्त न करूँ तो क्या पता ख़ुदा तआला मेरे साथ कैसा व्यवहार करे।

इसलिए जब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जैसे महान व्यक्ति, जो सभी नेक लोगों के सरदार हैं, कर्मों से निर्लिप्त नहीं होते, तो अन्य लोग कैसे निर्लिप्त हो सकते हैं? अन्य लोग कैसे कह सकते हैं कि हम कर्मों से मुक्त हो गए, हमें कर्मों की आवश्यकता नहीं, ख़ुदा तआला हमें क्षमा कर देगा।

यह तो अविश्वासियों की बातें हैं, किसी सच्चे विश्वास रखने वाले की नहीं।

(उद्धारित सीरत-उन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, लेखक मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु, जिल्द 2, पृष्ठ 183)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़िक्र-ए-इलाही भी एक सुन्नत है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ुदा तआला का स्मरण किया करते थे। इस विषय में भी एक ख़ुत्बे में मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने बताया कि स्मरणों में से एक वह स्मरण है जो सोते समय किया जाता है।

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सोते समय आयतुल कुर्सी, सूरह इख़लास, सूरह फ़लक और सूरह नास जो क़ुरआन-ए-करीम की अंतिम तीन सूरहें हैं तीन बार पढ़कर हाथों पर फूँकते थे, और फिर उन हाथों को अपने शरीर पर फेरते थे।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सिर से शुरू करते और जहाँ तक हाथ पहुँच सकता वहाँ तक फेरते थे। यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत है कि जिस कार्य को आपने धार्मिक कार्य समझकर नियमित रूप से और निरंतर किया हो उसे सुन्नत कहा जाता है।

चूँकि यह स्मरण भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमेशा किया करते थे अर्थात रात को आयतुल कुर्सी पढ़ना और तीनों क़ुल पढ़ना इसलिए इस सुन्नत का पालन भी हर मुसलमान को करना चाहिए, बल्कि इसे अपने जीवन का आवश्यक भाग बना लेना चाहिए।

इसलिए स्मरण को यह सोचकर नहीं छोड़ना चाहिए कि यह इतना आवश्यक नहीं कि इसे न करने से मनुष्य नरक में चला जाएगा। और यह भी नहीं समझना चाहिए कि केवल यही स्मरण मनुष्य को स्वर्ग में ले जाने के लिए पर्याप्त है और इसके साथ अन्य कर्मों की आवश्यकता नहीं।

जो फ़र्ज़ हैं, उन्हें भी पूरा करना होगा। कुछ लोग मुझे पत्र लिखते हैं और पूछते हैं कि कोई छोटी-सी दुआ बता दें, कोई ऐसा ज़िक्र बता दें जिसे हम करते रहें ताकि हमारे अंदर नेकियाँ भी पैदा हो जाएँ, हमारे गुनाह भी मिट जाएँ, हमारे काम भी बन जाएँ और ख़ुदा तआला का क़ुर्ब भी प्राप्त हो जाए।

तो सबसे पहली बात उपासना है, अर्थात् नमाज़ें जो फ़र्ज़ हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़र्ज़ के बाद नफ़्ल नमाज़ें भी अदा कीं। इसलिए नमाज़ों में ख़ुदा तआला के सामने उपस्थित होने के जो स्तर हैं, उन्हें पहले प्राप्त करने की आवश्यकता है। इसके बाद नफ़्ल हैं। फिर ज़िक्र-ए-इलाही है। ज़िक्र मनुष्य को और अधिक नेकियों की ओर ध्यान दिलाता है।

लेकिन इसके साथ अन्य सदाचार और कर्मों को निभाना भी आवश्यक है। मनुष्य को उत्तम नैतिक गुणों का भी धारण करना चाहिए। ख़ुदा तआला का क़ुर्ब प्राप्त करने, अपने समस्याओं के समाधान और अपनी दुआओं की स्वीकृति के लिए यह आवश्यक है कि ख़ुदा तआला के प्रत्येक आदेश पर अमल किया जाए और उसी प्रकार किया जाए जिस प्रकार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें करके दिखाया। इसकी कोशिश की जाए और इस संपूर्ण सुन्नत पर अमल किया जाए।

संक्षेप में, ज़िक्र के बारे में यह विचार नहीं होना चाहिए कि उसे छोड़ देने से मनुष्य नरक में चला जाएगा, और न यह कि केवल ज़िक्र ही मनुष्य को स्वर्ग में ले जाएगा या केवल उसी से हमारे सभी काम पूरे हो जाएंगे। कर्म आवश्यक हैं और फ़र्ज़ भी आवश्यक हैं।

जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जैसे महान व्यक्ति अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए इन ज़िक्रों के आवश्यकता-मंद थे, तो हम कैसे कह सकते हैं कि हमें ऐसे ज़िक्रों की आवश्यकता नहीं है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह सुन्नत थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सोते समय हमेशा आयतुल कुर्सी और तीनों "क़ुल" तीन बार पढ़ते थे, जैसा कि वर्णन किया गया है, और फिर हाथों पर फूँककर उन्हें अपने शरीर पर फेरते थे।

(उद्धारित ख़ुत्बात-ए-महमूद, जिल्द 11, पृष्ठ 19-21)

मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ अन्य बातों की ओर भी बहुत विस्तार से ध्यान दिलाया है। एक स्थान पर लिखा है कि जो लोग धर्म के अगुआ होते हैं, उन्हें यह बहुत चिंता होती है कि हमारी उपासनाएँ और ज़िक्र अन्य लोगों से अधिक हों। कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो धर्म के नेता होते हैं, अपने आप को विद्वान कहलाते हैं या धार्मिक संगठनों के प्रमुख कहलाते हैं। वे यह समझते हैं कि हमारी उपासनाएँ दूसरों से अधिक होनी चाहिए।

फिर इसके लिए वे विशेष रूप से बनावट का सहारा लेते हैं ताकि लोग उन्हें धर्मपरायण समझें। जो बड़े नेता और राजनेता हैं, वे भी आजकल यही करने लगे हैं उनके हाथों में माला होती है। मस्जिद के इमाम हों या किसी संगठन के पदाधिकारी, वे अपने आप को संसार के लिए आदर्श समझते हैं या ऐसा अनुभव कराने की कोशिश करते हैं कि हम तुम्हारे लिए आदर्श हैं।

वे समझते हैं कि हम आदर्श हैं, इसलिए बनावट से काम लेते हैं और बाहर से ऐसा दिखाते हैं। मुसलमानों में भी यह बातें हैं और अन्य धर्मों के नेताओं में भी होती हैं। कुछ जनजातियों की परंपराओं में भी ऐसी बातें मिलती हैं।

यदि वे मुसलमान हैं तो अपनी अवस्था दिखाने का उनका हाल यह होता है कि यदि वे वुज़ू करते हैं तो विशेष दिखावे के साथ बहुत देर तक अंगों को धोते रहते हैं। यहाँ तक कहते हैं कि वुज़ू करते समय जो पानी की बूँदें गिर रही हैं, वे भी शरीर पर नहीं पड़नी चाहिएँ, नहीं तो उससे भी अशुद्धि हो जाती है।

वे सज्दे और रुकू भी बहुत लंबे-लंबे करते हैं। अपने चेहरे से विनम्रता और नम्रता की स्थिति दिखाते हैं, लेकिन केवल दिखाने के लिए। यदि यह ख़ुदा तआला का प्रेम प्राप्त करने के लिए किया जाए तो बात अलग है, लेकिन वे यह संसार को दिखाने के लिए करते हैं। लोगों के सामने बहुत वज़ीफ़े पढ़ेंगे, हाथ में तस्बीह होगी और बाहर से ज़िक्र करते हुए दिखाई देंगे।

लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, इस तथ्य के बावजूद कि आप सबसे अधिक धर्मपरायण और सबसे अधिक ख़ुदा तआला से डरने वाले थे, इन सब बातों में अत्यंत सादगी वाले थे और आपकी जीवन-पद्धति इन बनावटों से पूर्णतः मुक्त थी।

अबू क़तादा रज़ियल्लाहु अन्हो से वर्णन है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कभी-कभी मैं नमाज़ में खड़ा होता हूँ और इरादा करता हूँ कि नमाज़ को लंबा कर दूँ, लेकिन जब किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुन लेता हूँ तो इस डर से कि कहीं बच्चे की माँ को कष्ट न हो, नमाज़ को छोटा कर देता हूँ।

कितनी सादगी से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बताया कि हम बच्चे की आवाज़ सुनकर नमाज़ को जल्दी समाप्त कर देते हैं। आजकल के कुछ सूफ़ी शायद

ऐसे कथन को अपनी अपमान समझेंगे। वे तो इस बात को व्यक्त करने में अपना गर्व समझते हैं कि हम नमाज़ में इतने मग्न हो जाते हैं कि हमें कुछ खबर नहीं रहती, चाहे पास ढोल भी बजते रहें तो हमें कुछ ध्यान नहीं आता।

लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इन बनावटों से पूर्णतः मुक्त थे। आपकी महानता खुदा तआला की दी हुई थी, मनुष्यों ने आपको महान नहीं बनाया था। आपको मनुष्यों से कुछ नहीं चाहिए था, आपको तो खुदा तआला से महानता चाहिए थी। इसलिए आप इन बातों से मुक्त थे।

ऐसा विचार वही कर सकते हैं जो मनुष्यों की प्रतिष्ठा को ही प्रतिष्ठा देने वाला समझते हों। यह दिखावा उन्हीं लोगों का हो सकता है जो मनुष्य को प्रतिष्ठा देने वाला समझते हैं। जो खुदा तआला को प्रतिष्ठा देने वाला मानते हैं, वे उसी प्रकार की सुन्नत अपनाते हैं जैसी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्थापित की और अपने कर्म से प्रकट की। वे ऐसा विचार कभी नहीं कर सकते। उनमें सादगी होती है और होनी भी चाहिए।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि एक बार उनसे पूछा गया कि क्या नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जूतों सहित नमाज़ पढ़ लिया करते थे?

एक ओर उपासनाएँ हैं और उनमें अच्छे स्तर प्राप्त करने हैं, लेकिन जहाँ सरलता की आवश्यकता है वहाँ सरलता भी है। जिस प्रकार अस्र की नमाज़ के समय के बारे में मैंने बताया कि हर पहलू को सामने रखा जाता है, लेकिन मुख्य बात यही है कि खुदा तआला की उपासना उद्देश्य हो और उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने की ओर ध्यान हो।

जब उनसे पूछा गया कि क्या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जूतों सहित नमाज़ पढ़ लेते थे, तो उन्होंने उत्तर दिया कि हाँ, आप पढ़ लिया करते थे। इस घटना से पता चलता है कि आप किस प्रकार बनावट से बचते थे।

आज भी स्थिति यही है। हमारे एक अहमदी ने मुझे लिखा कि किसी ने उससे कहा कि तुम यह कलिमा पढ़ रहे हो या तुमने फलाँ बात कही है। उसने उत्तर दिया कि तुम तो नमाज़ भी नहीं पढ़ते, न तुम्हें नमाज़ आती है, न तुमने क़ुरआन-ए-करीम पढ़ा है। तुम्हें क्या पता? तुम्हारा इससे क्या संबंध?

तो वह आगे से कहता है कि आए या न आए, लेकिन क्योंकि तुम अहमदी मिर्ज़ाई हो, क़ादियानी हो, इसलिए तुमने नमाज़ नहीं पढ़नी और न तुम्हें आनी चाहिए।

यह आजकल भी लोगों का हाल है। हमारे विरोधी हैं, लेकिन स्वयं उनके अपने कर्म नहीं हैं।

बहरहाल, खुदा तआला की उपासना के लिए पवित्रता और स्वच्छता आवश्यक शर्त है और यह बात क़ुरआन-ए-करीम और हदीसों से सिद्ध है। इसलिए यदि जूते स्वच्छ हों और सामान्य स्थानों पर जहाँ अशुद्धि लगने का डर हो वहाँ पहनकर न गए हों, तो आवश्यकता के समय उनमें नमाज़ पढ़ने में कोई हानि नहीं।

और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ऐसा करके उम्मत-ए-मुहम्मदिया पर बहुत बड़ा उपकार किया कि उन्हें भविष्य के लिए बनावट और कठिन औपचारिकताओं से बचा लिया। इस उत्तम आदर्श से उन लोगों को लाभ उठाना चाहिए जो आजकल इन बातों पर झगड़ते हैं और बनावट के प्रेमी हैं।

जिस कर्म से खुदा तआला की महानता और धर्मपरायणता में कोई अंतर न आए, उसे करने से मनुष्य की महानता में भी कोई अंतर नहीं पड़ता।

(उद्धारित आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सादा जीवन-पद्धति, अनवारुल उलूम, जिल्द 12, पृष्ठ 517-519)

फिर इक़ामत-ए-सलात अत्यंत आवश्यक बात है। इसमें स्वयं नमाज़ पढ़ना, दूसरों को पढ़ाना, और सच्चाई व उत्साह के साथ पढ़ना शामिल है। वुज़ू करके ठहर-ठहर कर, जमाअत के साथ और सभी शर्तों के साथ नमाज़ पढ़ना भी इसमें सम्मिलित है।

हदीसों में आता है कि नमाज़ खुदा तआला और बंदे के बीच मिलने का एक माध्यम है। मानो इसके द्वारा वह दिव्य रंग, जिसे खुदा तआला नबी के माध्यम से उत्पन्न करना चाहता है, विश्वास रखने वालों पर चढ़ जाता है और वे खुदा तआला के रंग में रंग जाते हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का इतना ध्यान रखते थे कि एक बार आपके पास एक अंधा व्यक्ति आया और उसने निवेदन किया: "ऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मेरा घर मस्जिद से बहुत दूर है और मुझे मस्जिद पहुँचने में बहुत कठिनाई होती है। यदि आप अनुमति दें तो मैं वर्षा के दिनों में अपने घर में ही नमाज़ पढ़ लिया करूँ।"

मदीना में कच्चे मकान थे। वर्षा के कारण गलियों में पानी भर जाता था और लोगों को मकानों की दीवारों के साथ-साथ चलना पड़ता था। लेकिन दीवारों को वर्षा के पानी से बचाने के लिए उनके साथ पत्थर लगाए जाते थे ताकि पानी टकराकर कच्ची दीवारों को नुकसान न पहुँचाए।

उस अंधे साथी ने कहा कि मैं पानी के कारण रास्ते के बीच से नहीं चल सकता। यदि किनारे से चलूँ तो मुझे दिखाई नहीं देता और वहाँ पत्थर चुभते हैं, जिससे घायल होने और गिरने का डर रहता है। इसलिए क्या मैं घर में नमाज़ पढ़ लिया करूँ?

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "ठीक है, पढ़ लिया करो, यदि तुम्हें यह कठिनाई आती है तो कोई हानि नहीं।"

जब वह वहाँ से चले गए तो थोड़ी देर बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने साथियों से फ़रमाया कि उसे वापस बुलाकर लाओ। जब वह वापस आए तो आपने पूछा: "क्या तुम्हारे घर तक अज़ान की आवाज़ पहुँच जाती है?"

उन्होंने कहा: "हाँ, ऐ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! अज़ान की आवाज़ पहुँच जाती है।"

तब आपने फ़रमाया: "यदि अज़ान की आवाज़ तुम्हारे घर तक पहुँचती है तो मस्जिद में आते समय चाहे तुम्हें ठोकरें लगें या तुम घायल हो जाओ, फिर भी तुम्हें मस्जिद अवश्य आना चाहिए।"

(उद्धारित तफ़्सीर-ए-कबीर, जिल्द 10, पृष्ठ 23-25, संस्करण 2022)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"मैं फिर कहता हूँ कि खुदा तआला के प्रेम के वृक्ष उसमें उत्पन्न होकर बढ़ेंगे और उनमें वे मधुर और पवित्र फल लगेंगे जो 'उकुलुहा दाइमुन' (अर-रअद: 36) के अनुसार सदैव बने रहेंगे।"

याद रखो कि यह वही स्थान है जहाँ सूफ़ियों के आध्यात्मिक मार्ग का अंत होता है। जब साधक यहाँ पहुँचता है तो उसे हर ओर खुदा तआला का ही प्रकाश दिखाई देता है।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि...

सच्ची उपासना का अर्थ है तअब्द अर्थात् उपासना की अवस्था का सही होना।

ऐसी अवस्था जहाँ खुदा तआला की याद बनी रहे, और उसकी उपासना करते समय केवल खुदा तआला ही सामने हो वही वास्तविक उपासना है।

आपने फ़रमाया: اِنَّنِیْ لَکُمْ مِّنْہُ نَذِیْرٌ وَّبَشِیْرٌ (हूद: 3)।

अर्थात् "मैं तुम्हारे लिए उसकी ओर से डराने वाला और शुभ समाचार देने वाला हूँ।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि चूँकि यह तअब्द, अर्थात् पूर्ण तअब्द यानी पूरी तरह से खुदा तआला के लिए शुद्ध होकर उपासना करना बहुत महान कार्य है, और मनुष्य किसी उत्तम आदर्श और पूर्ण नमूने के बिना इसे नहीं कर सकता। किसी पवित्र शक्ति के पूर्ण प्रभाव के बिना वह इसे नहीं कर सकता।

इसीलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि मैं उसी खुदा तआला की ओर से डराने वाला और शुभ समाचार देने वाला बनकर आया हूँ। यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन करोगे और मुझे स्वीकार करोगे तो तुम्हारे लिए बड़ी-बड़ी खुशखबरियाँ हैं, क्योंकि मैं शुभ समाचार देने वाला हूँ। और यदि तुम अस्वीकार करोगे तो याद रखो कि मैं चेतावनी देने वाला बनकर आया हूँ। फिर तुम्हें बड़े-बड़े दंड और कष्टों का सामना करना पड़ेगा।

(उद्धारित मलफ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 472-473, संस्करण 2022)

अतः यह वह बात है जिस पर हमें ध्यान से विचार करना चाहिए। जब हमने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के उसवा-ए-हसना पर चलते हुए आपको स्वीकार किया है, तो हमने आपको शुभ समाचार देने वाला माना है।

और इन शुभ समाचारों को हम तभी प्राप्त कर सकते हैं जब हम अपनी उपासना के अधिकारों को भी पूरा करने वाले होंगे और आपके आदर्श पर चलने के लिए उस स्तर को प्राप्त करने का प्रयास करने वाले होंगे।

याद रहे कि प्रयास के लिए बलिदान देना पड़ता है, संघर्ष करना पड़ता है। कुछ लोग कह देते हैं कि हम पाँचों नमाज़ें पढ़ने की कोशिश करते हैं। यदि उनसे पूछा जाए तो वे यही कहते हैं, लेकिन यह अपने मन का धोखा है।

यदि प्रयास सच्चा हो तो उसके साथ चिंता और लगन भी होती है। इसलिए हम में से प्रत्येक को अपने आप का मूल्यांकन करने की आवश्यकता है कि हमारी ये कोशिशें वास्तव में सच्ची कोशिशें हैं भी या नहीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उपासना कैसी थी। आप ग़ार-ए-हिरा में जाया करते थे, जहाँ जंगली जानवरों, साँपों और चीते आदि का डर होता था। पहले इसका उल्लेख किया जा चुका है कि वहाँ आप दुआएँ किया करते थे।

इस बात को बताते हुए आपने फ़रमाया कि यह नियम है कि जब एक ओर का आकर्षण बहुत बढ़ जाता है तो दूसरी ओर का भय हृदय से दूर हो जाता है। जब खुदा तआला के प्रेम का आकर्षण बढ़ गया और उसकी उपासना की ओर ध्यान हो गया, तो फिर अन्य सांसारिक चीज़ों का भय दूर हो जाता है।

आपने उदाहरण दिया कि कुछ महिलाएँ जिनका स्वभाव बहुत डरपोक होता है, देखा गया है कि जब उनका बच्चा बीमार हो जाता है तो वे अंधेरी रातों में आवश्यकता के कारण उन स्थानों पर भी चली जाती हैं जहाँ दिन में निकलना भी उनके लिए कठिन होता है।

आप फ़रमाते हैं कि जब खुदा तआला का भय और प्रेम हावी हो जाता है, तो अन्य सभी भय और प्रेम समाप्त हो जाते हैं। ऐसी दुआ के लिए एकांत भी आवश्यक है। उसी पूर्ण संबंध के साथ दिव्य प्रकाश प्रकट होते हैं, और हर संबंध एक परदे को चाहता है, अर्थात् वह छिपा हुआ संबंध होता है, तभी वह प्रकट होता है।

(उद्धारित मलफ़ूज़ात, जिल्द 7, पृष्ठ 186, संस्करण 2022)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि उपासना केवल खुदा तआला के लिए हो, दिखावे के लिए न हो।

"आज्ञापालन, उपासना और सेवा में यदि धैर्य से काम लो तो खुदा तआला उसे कभी व्यर्थ नहीं जाने देगा। इस्लाम में ऐसे हज़ारों लोग हुए हैं जिन्हें लोगों ने केवल उनके प्रकाश से पहचाना है। उन्हें कपटियों की तरह भगवा वस्त्र या लंबे चोगे और विशेष पहचान देने वाले कपड़ों की आवश्यकता नहीं होती, और न ही खुदा तआला के सच्चे लोगों ने ऐसी वर्दियाँ पहनी हैं।"

कि चोगे पहनकर फिर समझ लें कि बड़ा फ़क़ीर है, बड़ा सूफ़ी है या बड़ा नेक है।

"हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कोई ऐसा विशेष वस्त्र नहीं था जिससे आप लोगों में अलग पहचाने जाते। बल्कि एक बार एक व्यक्ति ने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को नबी समझ लिया और उनसे हाथ मिलाकर उनका सम्मान करने लगा। तब अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो उठकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को पंखा झलने लगे और अपने शब्दों से नहीं बल्कि अपने कार्य से बता दिया कि नबी तो ये हैं, मैं तो सेवक हूँ।

जब मनुष्य खुदा तआला की बंदगी करता है तो उसे रंग-बिरंगे कपड़े पहनने, विशेष रूप बनाने और माला आदि लटकाकर चलने की क्या आवश्यकता है।"

अर्थात् कुछ लोग गले में मनकों की माला डाल लेते हैं और हाथों में लंबी-लंबी तस्बीहें होती हैं।

"ऐसे लोग संसार के कुत्ते होते हैं।" यह तो संसार के लोग हैं, खुदा तआला के नहीं।

"खुदा तआला को चाहने वालों को इतनी फुर्सत कहाँ होती है कि वे विशेष कपड़ों और वर्दी की व्यवस्था करें। वे तो लोगों की नज़रों से छिपे रहना चाहते हैं। कभी-कभी खुदा तआला अपनी इच्छा से उन्हें बाहर ले आता है ताकि अपनी दिव्यता का प्रमाण दे।"

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को कभी यह इच्छा नहीं थी कि लोग आपको नबी कहें और आपकी आज्ञा का पालन करें। इसी कारण आप एक गुफा में, जो कब्र से भी अधिक संकरी थी, जाकर उपासना किया करते थे और आपका कोई इरादा नहीं था कि वहाँ से बाहर आएँ। अंततः खुदा तआला ने अपनी योजना के अनुसार आपको स्वयं बाहर निकाला और आपके माध्यम से संसार पर अपने प्रकाश को प्रकट किया।

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 6, पृष्ठ 125-126, संस्करण 2022)

खुदा तआला हमें उस प्रकाश से लाभ प्राप्त करने की क्षमता प्रदान करे। हमें खुदा तआला की उपासना का अधिकार पूरा करने की क्षमता मिले, और हमें आपके उसवा-ए-हसना को अपनाने की शक्ति प्राप्त हो।

और खुदा तआला हमें आपके उसवा-ए-हसना पर चलने तथा सच्चे अर्थों में उस पर चलने का प्रयास करने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

(अलफ़ज़्ल इंटरनेशनल, 27 फ़रवरी 2026, पृष्ठ 2-8)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

सहीह बुख़ारी की किताब बद्उल-वह्यी में भी यही विषय वर्णित किया गया है। हज़रत इब्न-ए-अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है:

كَانَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَجْوَدَ النَّاسِ وَكَانَ اَجْوَدُ مَا يَكُوْنُ فِيْ رَمَضَانَ حِيْنَ يَلْقَاهُ جِبْرِيْلُ وَكَانَ يَلْقَاهُ فِيْ كُلِّ لَيْلَةٍ مِنْ رَمَضَانَ فَيُدَارِسُهُ الْقُرْاٰنَ فَلَرَسُوْلُ اللّٰہِ (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ) اَجْوَدُ بِالْخَيْرِ مِنَ الرِّيْحِ الْمُرْسَلَةِ

(बुख़ारी, किताब बद्उल-वह्य, अध्याय: वह्य का आरंभ कैसे हुआ)

अर्थात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सभी लोगों से अधिक उदार थे, और रमज़ान में आपकी उदारता और भी अधिक हो जाती थी, जब जिब्रील आपसे मिलते थे। जिब्रील रमज़ान के महीने में हर रात आपसे मिलते थे और पूरे क़ुरआन करीम का आपके साथ मिलकर दौर किया करते थे। उन दिनों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भलाई और उदारता में वर्षा लाने वाली हवा से भी अधिक बढ़ जाते थे।

(तफ़सीर-ए-कबीर, जिल्द 1, पृष्ठ 395–394)

★ ★ ★

दारुस्सनाअत कादियान
(Ahmadiyya Vocational Training Centre)
में वर्ष 2026-2027 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्नलिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing
Electrician
Welding
Motor Vehicle
AC & Refrigerator
Diesel Mechanic
Computer Applications

कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतेज़ाम उपलब्ध है । रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेक्नीकल कोर्स करने के ख़्वाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतेज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Developmentकी क्लास भी ली जाती है। नए सैशन 2026 -2027 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com
9872725895, 8077546198
(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमदरज़ि. जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

ग़ार-ए-हिरा (अर्थात् हिरा की गुफा) में उपासना करना

रसूले करीम (स.अ.व.) की आयु जब तीस वर्ष से अधिक हुई तो आप के हृदय में ख़ुदा तआला की उपासना की प्रेरणा पहले से अधिक प्रबल होने लगी। अन्ततः आप शहर के लोगों के उपद्रवों, दुराचारों और दुष्कर्मों से घृणा करते हुए मक्का से दो तीन मील की दूरी पर एक पहाड़ी की चोटी पर एक पत्थरों से बनी हुई छोटी सी गुफा में ख़ुदा तआला की उपासना करने लग गए। हज़रत ख़दीजारज़ि. कुछ दिन का भोजन आप के लिए तैयार कर देतीं आप वह लेकर हिरा नामक गुफा में चले जाते थे और उन दो-तीन पत्थरों के अन्दर बैठ कर ख़ुदा तआला की उपासना में रात-दिन व्यस्त रहते थे।

क़ुर्आन की प्रथम वह्यी (ईशवाणी)

जब आप (स.अ.व.) की आयु चालीस वर्ष की हुई तो एक दिन आपस. ने उसी गुफा में एक कश्फ़ी दृश्य देखा कि एक व्यक्ति आप को सम्बोधित करके कहता है कि "पढ़िए" आपस. ने फ़रमाया मैं तो पढ़ना नहीं जानता। इस पर उसने पुनः और फिर तीसरी बार कहा और अन्ततः उसने आपस. से पांच वाक्य कहलवाए

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۚ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ
الْاَكْرَمُ ۙ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۙ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۙ

यह वह क़ुर्आनी प्रारम्भिक ईशवाणी है जो मुहम्मद रसूलुल्लाहह (स.अ.व.) पर अवतरित हुई। इस का अर्थ यह है कि समस्त संसार को अपने प्रतिपालक के नाम पर जिसने तुझे और समस्त सृष्टि को उत्पन्न किया है पढ़कर ख़ुदा का सन्देश दे। वह ख़ुदा जिसने मनुष्य को इस प्रकार पैदा किया है कि उसके हृदय में ख़ुदा तआला और उसकी सृष्टि के प्रेम का बीज पाया जाता है। हां समस्त संसार को यह सन्देश सुना दे कि तेरा रब्ब जो सब से अधिक सम्मान वाला है तेरे साथ होगा, वह जिसने संसार को विद्याएं सिखाने के लिए क़लम बनाया है और मनुष्य को वह कुछ सिखाने के लिए तत्पर हुआ है जो इस से पूर्व मनुष्य नहीं जानता था। यह कुछ शब्द क़ुर्आन करीम की उन समस्त शिक्षाओं पर आधारित हैं जो भविष्य में मुहम्मद रसूलुल्लाहह (स.अ.व.) पर अवतरित होने वाली थीं और संसार-सुधार का एक महत्त्वपूर्ण बीज इनके अन्दर पाया जाता था। इनकी व्याख्या तो क़ुर्आन करीम में यथास्थान आएगी। इस अवसर पर इन आयतों का वर्णन इसलिए कर दिया गया है कि रसूले करीम (स.अ.व.) के जीवन की यह प्रमुख घटना है और क़ुर्आन करीम के लिए ये आयतें एक नींव के पत्थर की हैसियत रखती हैं। मुहम्मद रसूलुल्लाहह (स.अ.व.) पर जब यह वाणी अवतरित हुई तो आप के हृदय में यह भय उत्पन्न हुआ कि क्या मैं ख़ुदा तआला की ओर से सुपुर्द किया हुआ इतना बड़ा दायित्त्व निबाह सकूँगा ? कोई और होता तो अभिमान और अहंकार से उसका मस्तिष्क फिर जाता कि सामर्थ्यवान ख़ुदा ने एक कार्य मेरे सुपुर्द किया है परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाहह (स.अ.व.) काम करना जानते थे ; काम पर अहंकार करना नहीं जानते थे। आप इस इल्हाम (ईशवाणी) के पश्चात् हज़रत ख़दीजारज़ि. के पास आए। आप का चेहरा उतरा हुआ था तथा घबराहट के लक्षण प्रकट थे। हज़रत ख़दीजारज़ि. ने पूछा आख़िर हुआ क्या ? आप ने सारी घटना सुनाई और फ़रमाया मुझ जैसा कमज़ोर व्यक्ति इस भार (दायित्त्व) को किस प्रकार उठा सकेगा ? हज़रत ख़दीजारज़ि. ने कहा

كَلَّا وَاللهِ مَا يُخْزِيْكَ اللهُ اَبَدًا اِنَّكَ لَتَصِلُ الرَّحِمَ وَ تَحْمِلُ الْكَلَّ وَ تَكْسِبُ
الْمَعْدُوْمَ وَتَقْرِى الضَّيْفَ وَتُعِيْنُ عَلٰى نَوَائِبِ الْحَقِّ [1]

ख़ुदा की क़सम यह वाणी ख़ुदा तआला ने आप पर इसलिए अवतरित नहीं की कि आप असफल और निराश हों और ख़ुदा आप का साथ छोड़ दे, ख़ुदा तआला ऐसा कब कर सकता है ? आप तो वह हैं कि परिजनों के साथ सद्व्यवहार करते हैं, असहाय और अनाथ लोगों का बोझ उठाते हैं, वे शिष्टाचार जो देश से मिट चुके थे वे आप के अस्तित्व के द्वारा पुनः स्थापित हो रहे हैं, मेहमानों का सत्कार करते हैं और वास्तविक संकटों पर लोगों की सहायता करते हैं। क्या ऐसे मनुष्य को ख़ुदा तआला विपत्ति में डाल सकता है।

अतः वह आपको अपने चचेरे भाई वर्क़ा बिन-नौफ़िल के पास ले गईं जो ईसाई हो चुके थे उन्होंने जब यह घटना सुनीं तो सहसा बोल उठे। आप पर वही फ़रिश्ता उतरा है जो मूसा पर उतरा था[2] यह इस्तिस्ना, अध्याय-18 आयत-18 वाली भविष्यवाणी की ओर संकेत था। इस बात की सूचना आप के आज़ाद किए हुए ज़ैद को जो उस समय लगभग पच्चीस-तीस वर्ष के थे और अलीरज़ि. आप के चाचा के बेटे को जिस की आयु उस समय ग्यारह वर्ष की थी पहुँची तो दोनों आप पर तुरन्त ईमान ले आए।

हज़रत अबूबकर का हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) पर ईमान लाना

आप के बचपन के मित्र हज़रत अबू बकररज़ि. जो शहर से बाहर गए हुए थे जब शहर में वापस प्रवेश किया तो सहसा उनके कानों में ये आवाज़ें पड़ीं, तुम्हारा मित्र पागल हो गया है। वह कहता है कि आकाश से फ़रिश्ते उतर कर मुझ से बातें करते हैं। अबू बकर सीधे आपस. के द्वार पर आए और द्वार खटखटाया, जब आप ने द्वार खोला तो उन्होंने आपस. से उक्त वस्तु स्थिति के संबंध में प्रश्न किया। रसूले करीम (स.अ.व.) ने अपने बचपन के मित्र को ठोकर से बचाने के लिए वस्तु स्थिति का कुछ स्पष्टीकरण करना चाहा अबू बकर ने रोका और कहा कि मुझे केवल इतना उत्तर दीजिए कि क्या आपने यह घोषणा की है कि ख़ुदा के फ़रिश्ते आप के पास आए और उन्होंने आप से बातें कीं ? आपस. ने फिर बात को स्पष्ट करना चाहा। अबू बकररज़ि. ने क़सम देकर कहा कि केवल मेरे इस प्रश्न का उत्तर दीजिए और कुछ न कहिए। जब आपने सकारात्मक उत्तर दिया तो अबू बकररज़ि. ने कहा साक्षी रहिए मैं आप पर ईमान लाता हूँ और फिर कहा हे अल्लाह के रसूल ! आप तो तर्क देकर मेरे ईमान को कमज़ोर करने लगे थे, जिसने आपके जीवन को देखा हो क्या उसे आपकी सच्चाई के लिए किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता हो सकती है ?

मोमिनों की छोटी सी जमाअत

यह एक छोटी सी जमाअत थी जिससे इस्लाम की नींव पड़ी। एक स्त्री जो वृद्धावस्था की आयु को पहुँच रही थी, एक ग्यारह वर्षीय बालक, एक आज़ाद किया हुआ दास मातृ भूमि से दूर और दूसरों में रहने वाला जिसके पीछे कोई न था, एक युवा मित्र और एक ख़ुदा की वाणी का दावेदार, यह वह छोटा सा दल था जो संसार में प्रकाश फैलाने के लिए कुफ़्र और पथ-भ्रष्टता के मैदान की ओर निकला। लोगों ने जब बातें सुनीं तो उन्होंने उपहास किया और परस्पर आँखों से अन्यन्य संकेत

किए और संकेतों में एक-दूसरे को जताया कि ये लोग पागल हो गए हैं इनकी बातों पर चिन्तित न हो अपितु सुनो और आनन्द उठाओ परन्तु सत्य अपने पूर्ण वेग और वैभव के साथ प्रकट होना आरम्भ हुआ और यसइयाह नबी की भविष्यवाणी के अनुसार "आदेश पर आदेश आदेश पर आदेश, क़ानून पर क़ानून, क़ानून पर क़ानून" (अध्याय-28, आयत-13) होता गया। "थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहाँ" और एक अनजान भाषा से जिस से अरब सर्वथा अपरिचित थे, ख़ुदा ने मुहम्मद रसूलुल्लाहह (स.अ.व.) के द्वारा अरबों से बातें करना प्रारम्भ किया, युवकों के हृदय उद्वेलित हो उठे, सत्य प्रिय लोगों के शरीरों में कम्पन पैदा हुआ, उनके उपहासजन्य अट्टहासों में भक्तिभाव की रुचि जन्म लेने लगी तथा उनके स्वरों में शनैः शनैः प्रशंसा के जयघोषों का आरम्भ होने लगा तथा दोसों, युवकों और अत्याचारों से पीड़ित स्त्रियों का एक समूह आप के पास एकत्र होने लगा क्योंकि आपकी आवाज़ में स्त्रियां अपने अधिकारों की सुरक्षा देख रही थीं, दास अपनी आज़ादी की घोषणा सुन रहे थे तथा युवक बड़ी-बड़ी आशाओं और उन्नतियों के मार्ग खुलते हुए महसूस कर रहे थे।

मक्का के सरदारों की ओर से विरोध

जब अट्टहास और उपहास की आवाज़ों में से प्रशंसा और तारीफ़ के स्वर भी गूंजने लगे तो मक्का के सरदार घबरा गए, शासकों में भय पैदा होने लगा, वे एकत्र हुए, उन्होंने परामर्श किए, योजनाएं बनाईं, उपहास के स्थान पर अन्याय, अत्याचार, कठोरता और सामाजिक संबंध तोड़ने के प्रस्ताव पारित किए और उन पर यथार्थ रूप से आचरण भी होने लगा। अब मक्का इस्लाम के साथ टकराव के निर्णय पर पूर्ण रूप से गंभीर हो चुका था। अब उनके निकट पागलपन से भरा दिखाई देने वाला वह दावा यथार्थ रूप से एक प्रगतिशील आन्दोलन दिखाई दे रहा था। मक्का की राजनीति के लिए ख़तरा, मक्का के धर्म के लिए ख़तरा, मक्का के परस्पर रहन सहन के लिए ख़तरा तथा मक्का के रीति-रिवाजों के लिए ख़तरा दिखाई दे रहा था। इस्लाम एक नया आसमान और नई ज़मीन बनाता हुआ दिखाई देता था, जिस नए आकाश और नई पृथ्वी के होते हुए अरब का पुराना आकाश और पुरानी पृथ्वी का अस्तित्व शेष नहीं रह सकता था। अब यह प्रश्न मक्का वालों के लिए उपहास का प्रश्न नहीं रहा था, अब वह जीवन और मरण का प्रश्न था। उन्होंने इस्लाम की चुनौती को स्वीकार किया और उसी भावना के साथ स्वीकार किया जिस भावना के साथ नबियों के विरोधी नबियों की चुनौती को स्वीकार करते चले आए थे। वे तर्क का उत्तर तर्क से नहीं अपितु तीर और तलवार से देने पर तत्पर हो गए। इस्लाम की भलाई का उत्तर उसी प्रकार से उच्च शिष्टाचार से नहीं अपितु उन्होंने गाली-गलौज और अपशब्दों द्वारा देने का निर्णय कर लिया। संसार में एक बार फिर धर्म और अधर्म का महासंग्राम छिड़ गया, एक बार फिर शैतानी सेनाओं ने फ़रिश्तों पर धावा बोल दिया। भला उन मुट्ठी भर लोगों की शक्ति ही क्या थी कि मक्का वालों के सामने ठहर सकें, स्त्रियों का नितान्त निर्लज्जतापूर्वक वध किया गया, पुरुषों को टांगे चीर-चीर कर बड़ी वीभत्सता के साथ मृत्यु के घाट उतारा गया, दासों को गर्म रेत और खुरदरे पत्थरों पर उस सीमा तक घसीटा गया कि शरीर की खाल पशुओं की खाल के समरूप हो गई। एक दीर्घ अवधि के पश्चात्, इस्लाम की विजय के युग में जब इस्लाम की विजय-पताका सुदूर पूर्व-पश्चिम में लहरा रही थी, एक बार एक प्रारम्भिक नव दीक्षित मुस्लिम दास ख़ुबाबरज़ि. की पीठ नंगी हुई तो उनके साथियों ने देखा कि उनकी पीठ पर खाल मनुष्यों जैसी नहीं, जानवरों जैसी है, वे घबरा गए और उन से पूछा कि आप को कौन सा रोग है ? वह हंसे और कहा कि यह रोग नहीं यह स्मृति (यादगार) है उस समय की जब हम नए मुसलमान दासों को अरब के लोग मक्का की गलियों में खुरदरे कठोर पत्थरों पर घसीटा करते थे और हम पर निरन्तर यह अत्याचार जारी रखते थे, उसी के परिणाम स्वरूप हमारे शरीर की खाल का यह विकृत रूप आप देख रहे हैं।

मोमिन-दासों पर मक्का के क़ाफ़िरों का अत्याचार और अन्याय

वे दास जो मुहम्मद रसूलुल्लाहह (स.अ.व.) पर ईमान लाए, विभिन्न जातियों के थे, उनमें हबशी भी थे जैसे बिलालरज़ि., रूमी भी थे जैसे सुहैबरज़ि.। फिर उनमें ईसाई भी थे जैसे जुबैर और सुहैबरज़ि. और मुश्रिक (द्वैतवादी) भी थे। जैसे बिलालरज़ि., अम्माररज़ि.। बिलालरज़ि. को उसके स्वामी गर्म और तपती रेत में लिटा कर ऊपर या तो पत्थर रख देते या युवकों को सीने पर कूदने के लिए नियुक्त कर देते। हबशी नस्ल के बिलालरज़ि., उमय्या बिन ख़ल्फ़ नामक एक मक्का के रईस के दास थे। उमय्या उन्हें दोपहर के समय ग्रीष्म ऋतु में मक्का से बाहर ले जा कर तपती रेत पर नंगा करके लिटा देता था और बड़े-बड़े गर्म पत्थर उन के सीने पर रख कर कहता की 'लात' और 'उज़्ज़ा' का ख़ुदा तआलात्व स्वीकार करो और मुहम्मद (स.अ.व.) से अलग हो जाओ। इसके उत्तर में बिलालरज़ि. कहते 'अहद' 'अहद' अर्थात् अल्लाह एक ही है, अल्लाह एक ही है। उमय्या को आप का बार-बार यह उत्तर सुन कर और अधिक क्रोध आ जाता और वह आप के गले में रस्सा डाल कर उद्दण्ड लड़कों के सुपुर्द कर देता और कहता कि इसको मक्का की गलियों में पत्थरों के ऊपर घसीटते हुए ले जाओ जिसके कारण उनका शरीर रक्त से लहू-लुहान हो जाता परन्तु वह फिर भी 'अहद' 'अहद' कहते चले जाते अर्थात् "ख़ुदा एक है" "ख़ुदा एक है"। एक अन्तराल के पश्चात् जब ख़ुदा तआला ने मुसलमानों को मदीना में शान्ति प्रदान की और जब वे स्वतंत्रतापूर्वक इबादत करने योग्य हो गए तो रसूले करीम (स.अ.व.) ने बिलालरज़ि. को अज़ान देने के लिए नियुक्त किया। यह हबशी दास जब आज़ान में اَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ अश्हदो अन् ला इलाहा इल्लल्लाह के स्थान पर اَسْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ अस्हदो अन् ला इलाहा इल्लल्लाह कहता तो मदीना के लोग जो उसकी परिस्थितियों से परिचित न थे हँसने लग जाते। एक बार रसूले करीम (स.अ.व.) ने लोगों को बिलालरज़ि. की अज़ान पर हँसते देखा तो आप ने लोगों की ओर देखा और फ़रमाया तुम बिलालरज़ि. की अज़ान पर हंसते हो, परन्तु ख़ुदा तआला अर्श पर उसकी अज़ान को सुनकर प्रसन्न होता है। आपस. का संकेत इसी ओर था कि तुम्हें तो यह दिखाई देता है कि यह 'श' नहीं बोल सकता, परन्तु 'श' और 'स' में क्या रखा है। ख़ुदा तआला जानता है कि जब गर्म रेत पर नंगी पीठ के साथ इसे लिटा दिया जाता था और इसके सीने पर अत्याचारी अपने जूतों सहित कूदा करते थे तथा पूछते थे कि अब भी 'नसीहत' मिली या नहीं। तो यह अपनी टूटी-फूटी भाषा में 'अहद' 'अहद' कह कर ख़ुदा तआला के एक होने की घोषणा करता रहता था और अपनी वफ़ादारी, अपनी एकेश्वरवाद की आस्था और अपने हृदय की दृढ़ता का प्रमाण देता था। अतः उसका اَسْھَدُ (अस्हदो) बहुत से लोगों के اَشْھَدُ (अश्हदो) से अधिक मूल्यवान था।

शेष ..

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 19 March 2026 Issue No. 12

Act. MANAGER :
ATHAR AHMAD SHAMIM
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

(इस रिवायत में, जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सिर के दौरों के संबंध में हज़रत वालिदा साहिबा ने "हिस्टीरिया" शब्द का प्रयोग किया है, उससे वह बीमारी अभिप्रेत नहीं है जिसे चिकित्साशास्त्र के अनुसार हिस्टीरिया कहा जाता है। बल्कि यह शब्द यहाँ गैर-चिकित्सकीय अर्थ में सिर के चक्कर आने और हिस्टीरिया में आंशिक समानता के कारण प्रयोग किया गया है। अन्यथा, जैसा कि भाग द्वितीय की रिवायत संख्या 365 और 369 में स्पष्ट किया जा चुका है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को वास्तव में हिस्टीरिया नहीं था।

अतः स्वयं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जहाँ-जहाँ भी अपनी रचनाओं में अपनी इस बीमारी का उल्लेख किया है, वहाँ इसके संबंध में कभी भी हिस्टीरिया आदि शब्द का प्रयोग नहीं किया। और न ही चिकित्साशास्त्र के अनुसार सिर के चक्कर आने की बीमारी किसी भी प्रकार से हिस्टीरिया या मिरगी कहलाती है।

बल्कि सिर के चक्कर आने की बीमारी के लिए अंग्रेज़ी में संभवतः "वर्टिगो" शब्द प्रयुक्त होता है, जो शायद सिरदर्द ही का एक प्रकार है, जिसमें सिर में चक्कर आता है और गर्दन आदि की मांसपेशियों में खिंचाव अनुभव होता है। इस अवस्था में रोगी के लिए चलना या खड़ा होना कठिन हो जाता है, परंतु होश-ओ-हवास पर बिल्कुल भी प्रभाव नहीं पड़ता।

अतः यह विनीत लेखक अनेक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दौरे की अवस्था में देख चुका है और कभी भी ऐसी स्थिति नहीं देखी जिसमें होश-ओ-हवास पर कोई प्रभाव पड़ा हो।

और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की यह बीमारी भी वास्तव में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक भविष्यवाणी के अनुसार थी, जिसमें बताया गया था कि मसीह मौऊद दो पीली चादरों (अर्थात् दो बीमारियों) में लिपटा हुआ अवतरित होगा। देखो: मिश्कात, बाब अशरातुस्साअह, हवाला मुस्लिम आदि।

और रिवायत में जो ये शब्द आते हैं कि पहले दौरे के समय आपने कोई काली-काली चीज़ आकाश की ओर उठती हुई देखी, तो सिर के चक्कर आने के रोग में यह एक सामान्य बात है कि चक्कर के कारण आसपास की चीज़ें घूमती हुई ऊपर उठती दिखाई देती हैं। और इस कारण कि ऐसे दौरे के समय रोगी की प्रवृत्ति आँखें बंद कर लेने की होती है, प्रायः ये चीज़ें काले रंग की प्रतीत होती हैं।

और दौरे के समय बेहोशी जैसी अवस्था हो जाने से जैसा कि शब्दों से भी यही तथ्य प्रकट होता है यहाँ वास्तविक बेहोशी अभिप्रेत नहीं है, बल्कि अधिक कमजोरी के कारण आँखें न खोल सकना या बोल न सकना अभिप्रेत है। वल्लाहु अ'लम।

अधिक समझ के लिए रिवायत संख्या 293 ,81 और 459 भी देखी जाएँ, जिनसे इस प्रश्न पर और प्रकाश पड़ता है।

{20}

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। मुझसे हज़रत वालिदा साहिबा ने बयान किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पहली बैअत लुधियाना में ली थी। पहले दिन चालीस व्यक्तियों ने बैअत की थी। फिर जब आप घर में आए तो कुछ महिलाओं ने भी बैअत की।

सबसे पहले मौलवी साहब (हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहब) ने बैअत की थी।

इस विनीत लेखक ने पूछा कि आपने कब बैअत की?

वालिदा साहिबा ने कहा कि मेरे बारे में प्रसिद्ध है कि मैंने बैअत में विलंब किया और कई वर्षों बाद बैअत की। यह गलत है। बल्कि मैं कभी भी आपसे अलग नहीं हुई। मैं सदैव आपके साथ रही और प्रारंभ से ही अपने आपको बैअत में समझती रही और अपने लिए अलग से औपचारिक बैअत की आवश्यकता नहीं समझी।

यह विनीत लेखक निवेदन करता है कि प्रारंभिक बैअत के समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अभी मसीह होने और महदी होने का दावा नहीं किया था, बल्कि सामान्य सुधारक के रूप में आप बैअत लेते थे।

इस विनीत लेखक ने वालिदा साहिबा से पूछा कि मौलवी साहब के अतिरिक्त और किन-किन लोगों ने पहले दिन बैअत की थी?

वालिदा साहिबा ने मियाँ अब्दुल्लाह साहब सनौरी और शेख हामिद अली साहब का नाम लिया।

{21}

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। मुझसे हज़रत वालिदा साहिबा ने बयान किया कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मसीह होने का दावा प्रकाशित करना आरंभ किया, उस समय आप क़ादियान में थे। आपने इसके संबंध में प्रारंभिक पुस्तिकाएँ यहीं लिखीं। फिर आप लुधियाना तशरीफ़ ले गए और वहीं से दावा प्रकाशित किया।

वालिदा साहिबा ने कहा कि दावा प्रकाशित करने से पहले आपने मुझसे कहा था कि मैं ऐसी बात की घोषणा करने जा रहा हूँ जिससे देश में विरोध का बहुत शोर उठेगा।

वालिदा साहिबा ने कहा कि इस घोषणा के कारण प्रारंभिक बैअत करने वालों में से कुछ लोगों को भी ठोकर लग गई।

{22}

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। मुझसे हज़रत वालिदा साहिबा ने बयान किया कि एक बार जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम सियालकोट में मीर हामिद शाह साहब के घर पर थे और सो रहे थे, तब मैंने आपकी ज़ुबान से एक वाक्य निकलते सुना।

मैंने समझा कि यह कोई ईश्वरीय संदेश है। फिर जब आप जागे तो मैंने कहा कि क्या आपको यह ईश्वरीय संदेश हुआ है?

आपने कहा, हाँ, तुम्हें कैसे पता चला?

मैंने कहा, मुझे इसकी आवाज़ सुनाई दी थी।

इस विनीत लेखक ने पूछा कि ईश्वरीय संदेश के समय आपकी क्या अवस्था होती थी?

वालिदा साहिबा ने कहा कि चेहरा लाल हो जाता था और माथे पर पसीना आ जाता था।

यह विनीत लेखक निवेदन करता है कि एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने घर के छोटे आँगन में (अर्थात् जो वालिदा साहिबा का वर्तमान आँगन है) एक लकड़ी के तख्त पर विराजमान थे। संभवतः सुबह या शाम का समय था। आपको थोड़ी झपकी आई तो आप लेट गए। फिर आपके होंठों से कुछ आवाज़ सुनाई दी जिसे हम समझ न सके।

फिर आप जागे और कहा कि इस समय मुझे यह ईश्वरीय संदेश हुआ है।

किन्तु इस विनीत लेखक को वह संदेश याद नहीं रहा।

वालिदा साहिबा ने कहा कि जब आपको ईश्वरीय संदेश होता था तो उसके बाद आप तुरंत झपकी से जाग जाते थे और उसे लिख लेते थे। प्रारंभ में आप उसे अपनी किसी साधारण पुस्तक पर नोट कर लेते थे। फिर आपने बड़े आकार की एक कॉपी बनवा ली। उसके बाद आपने एक छोटी लेकिन मोटी नोटबुक बनवा ली थी।

इस विनीत लेखक ने पूछा कि अब वह नोटबुक कहाँ है?

वालिदा साहिबा ने कहा कि वह तुम्हारे भाई के पास है। (भाई से अभिप्राय हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह सानी अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ हैं)।

और इस विनीत लेखक के मामा डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहब भी बयान करते थे कि मैंने एक बार हज़रत साहिब को ईश्वरीय संदेश प्राप्त होते देखा था।

(शेष आगे)

(सीरतुल-महदी, जिल्द प्रथम, पृष्ठ 15 से 18, मुद्रित क़ादियान)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad